हिंदी
विवेक
WE WORK FOR A BETTER WORLD
Issue : - 14 - 20 June 2026

नियमित रक्तदान करें

किसी की जिंदगी बचाएं

रक्त की कमी को रोकें

मानवता का धर्म निभाएं

पितांबरी® टूर्स और ट्रॅवल्स

दुनिया घूमिए, अपनापन पाइए।

भारत के अद्वितीय स्थलों की सैर!

अष्टविनायक दर्शन
२ रातें / ३ दिन

श्री मयूरेश्वर | श्री सिद्धिविनायक | श्री बल्लाळेश्वर | श्री वरदविनायक

श्री चिंतामणी | श्री गिरीजात्मज | श्री विघ्नेश्वर | श्री महागणपती

स्टॅच्यू ऑफ युनिटी और बडोदरा
३ रातें / ४ दिन

महाबलेश्वर और वाई टूर
२ रातें / ३ दिन

श्री समर्थ रामदास द्वारा स्थापित ११ मारुती दर्शन
२ रातें / ३ दिन

टूर में शामिल :

- एसी बस / गाड़ी सफर और स्थानीय पर्यटन स्थलों की सैर
- ठहरने के लिए प्रीमियम होटल्स
- स्वादिष्ट भोजन की व्यवस्था
- जानकार गाइड और सभी प्रवेश टिकट

हमारे अन्य टूर्स

कोस्टल कर्नाटक	केरल	हंपी बदामी	राजस्थान- मेवाड़ / मारवाड़	कश्मीर
(बाय रोड) ६ रातें / ७ दिन	(बाय फ्लाईट) ४ रातें / ५ दिन	(बाय रोड) ५ रातें / ६ दिन	(बाय फ्लाईट) ५ रातें / ६ दिन	६ रातें / ७ दिन

जल्द ही हिमाचल और नैनीताल टूर्स का आयोजन

नेपाल टूर ! (बाय फ्लाईट) - ७ रातें / ८ दिन

Attractive Discount on Select Tours Costing more than ₹12000/-

अधिक जानकारी और बुकिंग के लिए संपर्क:

8657968481, 8530015838, 9702963400, 8657307352, 8828913131

अनुक्रमणिका

◆ रक्तदान के लाभ अपार	डॉ. मुकेश असीमित	04
◆ सामाजिक संगठनों का रक्तदान अभियान	डॉ. प्रवेश कुमार	06
◆ आप कर सकते हैं रक्तदान	डॉ. कृष्णा नंद पांडेय	08
◆ रक्तदान : महादान या महाव्यापार	डॉ. वेदप्रकाश दुबे	10
◆ प्रकाश और अंधकार का संघर्ष	अलकेश चतुर्वेदी	13
◆ अबहूं न बरसे बदरा	अभिषेक सुर्येश	15
◆ समाचार वाचक से मीडिया एंकर तक	मनीष शर्मा	18
◆ भारत सौर उर्जा उत्पादन में अग्रणी	वैदेही द्विवेदी	20
◆ आस्था से पर्यटन को नई उड़ान	प्रेम कुमार चौबे	22
◆ अधिकार व संघर्ष की कहानी पेड्डी	अतुल गंगवार	25
◆ फीफा विश्व कप 2026 का शुभारम्भ	राजीव रोहित	26
◆ इधर भी देखें	संकलन	28
◆ समाचार	–	29

पंजीयन शुल्क

UPI पेमेंट गेटवे के लिए QR कोड स्कैन करें और मैसेज बॉक्स में अपना नाम, पता व सम्पर्क नम्बर दर्ज करें।

वार्षिक मूल्य : 500 रुपये, त्रैवार्षिक मूल्य : 1200 रुपये
पंचवार्षिक मूल्य : 1800 रुपये, आजीवन मूल्य : 25,000 रुपये

कार्यालय : प्लॉट नम्बर 7, आरएससी रोड नम्बर-10, सेक्टर-2,
श्रीकृष्ण बिल्डिंग के पीछे, हनुमान मंदिर बस स्टॉप के समीप, चारकोप,
कांदिवली (पश्चिम), मुंबई- 400067. सम्पर्क : 9594991884

रक्तदान के लाभ अपार

रक्तदान केवल दान ही नहीं बल्कि जीवनदान भी होता है। रक्तदान करने से किसी को जहां नया जीवन मिलता हैं, वहीं अपने शरीर को भी कई लाभ मिलते हैं।

डॉ. मुकेश असीमित

कल्पना कीजिए कि अस्पताल के किसी कमरे में कोई बच्चा थैलेसीमिया से जूझ रहा है, किसी सड़क दुर्घटना में घायल व्यक्ति का ऑपरेशन चल रहा है या कोई कैंसर रोगी जीवन की लड़ाई लड़ रहा है। इन सबकी आशा की डोर एक ही चीज से जुड़ी होती है और वह है- रक्त। यह ऐसी अमूल्य औषधि है जिसे न किसी कारखाने में बनाया जा सकता है और न किसी प्रयोगशाला में। इसे केवल एक मानव ही दूसरे मानव को दे सकता है।

फिर भी हमारे समाज में रक्तदान को लेकर अनेक भ्रांतियां और डर आज भी हैं। कोई सोचता है कि रक्तदान करने से कमजोरी आ जाएगी, कोई मानता है कि शरीर में खून की कमी हो जाएगी, जबकि वास्तविकता इससे बिल्कुल अलग है।

रक्तदानः सेवा का सबसे सरल माध्यम

रक्तदान मानवता का उत्सव है। एक यूनिट रक्त से लाल रक्त कोशिकाएं, प्लाज्मा और प्लेटलेट्स अलग-अलग निकालकर कई मरीजों की सहायता की जा सकती है। इसीलिए कहा जाता है- एक रक्तदान, अनेक जीवनदान। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार दुनिया भर में लाखों मरीज समय पर रक्त न मिलने के कारण गम्भीर संकट में पड़ जाते हैं। यदि पर्याप्त स्वैच्छिक रक्तदाता उपलब्ध हों तो अनेक जानें बचाई जा सकती हैं।

रक्तदान के बाद शरीर में क्या होता है?

यह सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न है। जब कोई व्यक्ति लगभग 350 से 450 मिलीलीटर रक्तदान करता है तो उसे लगता है कि शरीर से बहुत अधिक रक्त निकल गया, जबकि एक वयस्क व्यक्ति के शरीर में लगभग 5 लीटर रक्त होता है। रक्तदान के बाद शरीर तुरंत पुनर्निर्माण की प्रक्रिया शुरू कर देता है। रक्त का तरल भाग यानी प्लाज्मा, लगभग 24-48 घंटे में वापस बन जाता है। लाल रक्त कोशिकाओं का निर्माण अस्थि मज्जा, यानी बोन मैरो, में तेजी से शुरू हो जाता है। लगभग 2 से 3 सप्ताह में रक्त की मात्रा सामान्य होने लगती है। पूर्ण जैविक संतुलन और आयरन भंडार की भरपाई के लिए कुछ सप्ताह और लगते हैं। यही कारण है कि शरीर को पर्याप्त समय देने के लिए पुरुषों को लगभग 3 महीने और महिलाओं को 4 महीने बाद पुनः रक्तदान करने की सलाह दी जाती है।

यह सबसे बड़ी भ्रांति है कि रक्तदान से कमजोरी आती है। सच्चाई यह है कि अधिकांश स्वस्थ लोगों को रक्तदान के बाद कोई विशेष कमजोरी अनुभव नहीं होती। रक्तदान के बाद कुछ मिनट आराम, पर्याप्त पानी, जूस और संतुलित भोजन लेने से व्यक्ति सामान्य दिनचर्या में लौट सकता है। हां, पहली बार रक्तदान करने वालों में कभी-कभी घबड़ाहट, हल्का चक्कर या कमजोरी का अनुभव हो सकता है, जो प्रायः मानसिक तनाव या खाली पेट आने के कारण होता है। इसलिए रक्तदान से पहले हल्का भोजन करना और पर्याप्त पानी पीना आवश्यक है।

रक्तदान के स्वास्थ्य लाभ

रक्तदान का सबसे बड़ा लाभ तो किसी आवश्यकतामंद की जान बचाना है, लेकिन इसके साथ कुछ व्यक्तिगत लाभ भी हैं। शरीर में नई रक्त कोशिकाओं के निर्माण को प्रोत्साहन मिलता

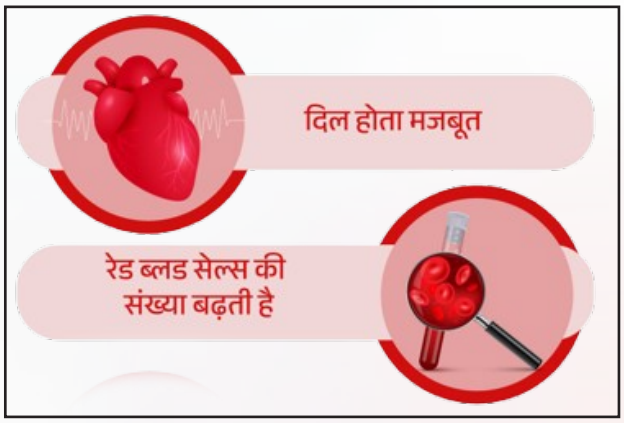

है। नियमित स्वास्थ्य परीक्षण का अवसर मिलता है। सामाजिक संतोष और मानसिक प्रसन्नता प्राप्त होती है। कुछ अध्ययनों में नियमित रक्तदान को हृदय स्वास्थ्य के लिए भी लाभकारी माना गया है। हालांकि रक्तदान को कभी भी केवल स्वास्थ्य लाभ के लिए नहीं बल्कि सामाजिक जिम्मेदारी के रूप में भी देखना चाहिए। कुछ परिस्थितियों में रक्तदान नहीं करना चाहिए। गर्भवती महिलाएं, स्तनपान कराने वाली माताएं, मासिक धर्म के दौरान महिलाएं, गम्भीर एनीमिया वाले व्यक्ति, हाल ही में बड़ी सर्जरी कराने वाले लोग, हाल में टैटू बनवाने वाले व्यक्ति, गम्भीर संक्रमण या संक्रामक रोग से पीड़ित लोग तथा कुछ विशेष चिकित्सकीय स्थितियों वाले रोगी रक्तदान से बचें। यदि किसी को कोई दीर्घकालिक बीमारी है तो रक्तदान से पहले चिकित्सकीय सलाह अवश्य लेनी चाहिए।

रक्तदान के बाद 10-15 मिनट आराम करें। पर्याप्त मात्रा में पानी और तरल पदार्थ लें। उसी दिन भारी व्यायाम, जिम या लम्बी दौड़ से बचें। धूम्रपान और शराब से परहेज करें। यदि चक्कर अनुभव हो तो तुरंत बैठ जाएं या लेट जाएं।

रक्तदानः डर नहीं, गर्व का विषय

रक्तदान ऐसा कार्य है जिसमें न धन लगता है, न विशेष समय। केवल 15-20 मिनट देकर हम किसी के जीवन में नई सुबह ला सकते हैं। किसी अस्पताल के बिस्तर पर लेटा मरीज यह नहीं पूछता कि रक्तदाता कौन था, उसका धर्म क्या था, जाति क्या थी या विचारधारा क्या थी। उसके लिए केवल इतना महत्वपूर्ण होता है कि समय पर रक्त मिल गया और जीवन बच गया। रक्तदान को अपनी आदत बनाइए। रक्तदान से डरिए नहीं। आप स्वयं भी रक्तदान कीजिए और दूसरों को भी प्रेरित कीजिए क्योंकि रक्तदान केवल रक्त देना नहीं है बल्कि किसी अनजान व्यक्ति को जीवन का दूसरा अवसर देना है। ★★★

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को समझने के लिए मौलिक एवं संग्रहणीय पुस्तक

हिंदी विवेक
" We Work For A Better World"

पद्मश्री रमेश पतंगे लिखित
'हिंदी विवेक' द्वारा प्रकाशित

हम संघ में क्यों हैं...

संघ विचारों की मूल प्रेरणा, संघकार्य को समझने की प्रक्रिया और इन सभी से संघ स्वयंसेवकों को अनायास मिलनेवाले राष्ट्रबोध और कर्तव्यबोध का वर्णन इस पुस्तक में किया गया है।

पंजीयन करें
पुस्तक का मूल्य
₹250/-

Draft or Cheque should be drawn in the name of HINDUSTHAN PRAKASHAN SANSTHA HINDI VIVEK

Bank Details : State Bank of India, Branch - Charkop, A/C No. : 00000043884034193, IFSC Code : SBIN0011694

UPI पेमेंट गेटवे के लिए QR कोड स्कॅन करे और मैसेज बॉक्स मे अपना नाम, पता व सम्पर्क नंबर दर्ज करें।

ग्रंथ पंजीकरण हेतु पत्रिका के स्थानीय प्रतिनिधि अथवा कांदिवली कार्यालय में सम्पर्क करें।

प्रशांत : 9594961855, संदीप : 9082898483, भोला : 9702203252, कार्यालय : 9594991884

योगदान

युवा रक्तदान करने में जहां अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, वहीं कई ऐसी सामाजिक संस्थाएं हैं जो रक्तदान अभियान चलाती हैं। इस दौरान कई यूनिट रक्त ब्लड बैंक को देती है, जो किसी के लिए जीवनदान बन जाता है।

सामाजिक संगठनों का रक्तदान अभियान

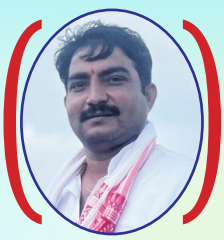

डॉ. प्रवेश कुमार

समाज भारत की दृष्टि में 'साम' और 'अज' के योग से बना है, जिसका अर्थ ही सबके साथ मिलकर चलने से है। इसी प्रकार से हम यदि रक्त को देखें तो यह सम्पूर्ण जगत को एकत्व के साथ जोड़ता है। जगत में विद्यमान सभी प्राणियों के रक्त का रंग लाल ही होता है। इसमें महत्वपूर्ण यह भी है कि मनुष्य आज तक रक्त का कृत्रिम निर्माण नहीं कर पाया है, यह रक्त व्यक्ति के शरीर में परम शक्ति की देन है। एक व्यक्ति के शरीर में अमूमन 3000 से 5000 मिली तक ही रक्त पाया जाता है। इसी रक्त का दान करके व्यक्ति समाज के प्रति अपने दायित्व का निर्वहन कर सकता है। विदित हो कि प्रत्येक दिन कई हजार लोगों की मृत्यु रक्त की कमी के कारण हो जाती है। विश्व स्तर पर प्रत्येक वर्ष लगभग 20 लाख लोगों की मृत्यु रक्त की कमी से होती है। इसलिए विश्व में किसी की भी मृत्यु रक्त की कमी से न हो, इस हेतु जनजागरण अभियान के लिए विश्व स्वास्थ्य संगठन ने 14 जून को विश्व रक्तदाता दिवस के रूप में मनाने का आह्वान किया है। हमारी हिंदू संस्कृति में दान को बड़े ही पवित्र भाव के साथ देखा गया है। महर्षि दधीचि ने विश्व मंगल के लिए अपनी अस्थियों तक का दान दिया था। देश और समाज की सेवा हेतु दान करने की वृत्ति भारत के जनमानस में सदैव से रही है, तभी तो संत कहते

हैं- 'स्वामी इतना दीजिए जामे कुटुम्ब समाय। मैं भी भूखा ना रहु साधु भी भूखा ना जाए।।' दान का अर्थ निस्वार्थ भाव से किसी की सहायता करना है। इसी प्रकार से रक्तदान केवल एक स्वास्थ्य सेवा नहीं है, यह एक सामाजिक जिम्मेदारी भी है। यह मानवता की सच्ची सेवा का उदाहरण है, जो जाति, धर्म, भाषा या क्षेत्र से परे जाकर केवल और केवल मानव जीवन को प्राथमिकता देता है। जीते-जी रक्तदान, जाते-जाते नेत्रदान, अंगदान का अहम संदेश देने वाले स्वयंसेवी संस्था दधीचि देहदान संस्था के सचिव पेशे से चिकित्सक डॉ. कीर्तिवर्धन साहनी कहते हैं- रक्तदान मानव जीवन का आधार है, मनुष्य में रक्त से ही जीवन शक्ति प्राप्त होती है। ऐसे दान से मानव को जीवनदान मिलता है, उसे महादान ही कहा जाता है। यदि हम संकल्प लें कि प्रत्येक 4 महीनों में रक्त दान करेंगे तो इससे एक तो देश में रक्त की कमी नहीं होगी। वहीं नया व शुद्ध रक्त बनने से हमारा स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा। इसी प्रकार से देह दान-अंग दान ऐसे विषय है जिसके बारे में मानवता के नाते सोचने से हम भी ईश्वरीय कार्य में एक प्रेरणा बन सकते हैं। 'रक्तदान से किसी को मिलता है जीवन दान' इसे अभियान के रूप में चलाने का कार्य वर्षों से सेवा भारती करती आ रही है। सेवा भारती के राष्ट्रीय मंत्री रामकुमार के अनुसार रक्त शरीर संचालन का प्रमुख अवयव है, रक्त बनाया नहीं जा सकता, एक शरीर से ही दूसरे को दिया जा सकता है। रक्तदान ऐसा दान है जो किसी आवश्यकता वाले व्यक्ति के लिए ही ठीक नहीं बल्कि रक्तदान करने वाले के लिए भी लाभकारी होता है। सेवा भारती हजारों यूनिट ब्लड प्रत्येक वर्ष एकत्रित करता है। यह रक्त दान दो प्रकार का है, एक जो कैम्प के माध्यम से होता है, वही एक आपातकालीन स्थिति में। दिल्ली स्वास्थ्य आयाम सेवा भारती का कहना है कि प्रत्येक दिन सेवा भारती से जुड़े कार्यकर्ता कहीं न कहीं रक्तदान करते हैं। हम प्रतिवर्ष लगभग 2500 यूनिट रक्त ब्लड बैंकों को उपलब्ध कराते हैं। इसी प्रकार से अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के द्वारा युवा छात्रों के बीच रक्तदान को जागरूकता अभियान के रूप में चलाया जाता है। एबीवीपी रक्तदान शिविरों के माध्यम से केवल दिल्ली में ही प्रत्येक वर्ष 1500-2000 यूनिट ब्लड विभिन्न ब्लड बैंक एकत्रित करने वाले संगठनों को करता है। एबीवीपी के दिल्ली संगठन मंत्री विपिन के अनुसार विद्यार्थी परिषद कॉलेज इकाई के अनुसार रक्तदान करने के लिए छात्रों को प्रोत्साहित करता है। इकाई और बस्ती के अनुसार छोटे-बड़े ब्लड डोनेशन कैम्प संगठन आयोजित करता रहता है। हम देखें कि देश भर में जिला रक्त बैंक के माध्यम से लाखों लोगों का जीवन बचाने का कार्य बजरंग दल करता है। बजरंग दल का मानना है कि देश में किसी की भी मृत्यु रक्त की कमी से नहीं होनी चाहिए। बजरंग दल ने वर्ष में एक दिन सम्पूर्ण देश में रक्तदान करके लिम्का वर्ल्ड बुक रिकॉर्ड में अपना नाम दर्ज किया है। हमें यह भी जानने की आवश्यकता है कि रक्तदान न केवल आवश्यकतामंद मरीजों की सहायता करने की एक पवित्र सेवा है बल्कि इससे दानकर्ता को भी कई स्वास्थ्य लाभ मिलते हैं। रक्तदान करने से शरीर में आयरन का संतुलन बना रहता है, जिसके कारण से हार्ड अटैक का संकट कम हो जाता है। हाल ही में भारत में महामारी की दूसरी लहर के दौरान कई मामले सामने आए और अस्पतालों में रक्त समूह की उपलब्धता के कारण कई लोग बच गए। भारत-चीन, पाकिस्तान युद्ध के दौरान अचानक रक्त की आवश्यकता के लिए उस समय की सरकार ने विश्व के सबसे बड़े स्वयंसेवी संगठन राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से रक्तदान के लिए आग्रह किया। जिसका परिणाम था कि लाखों की संख्या में संघ स्वयंसेवक अपने सैनिकों को रक्तदान के लिए दौड़ पड़े। इसलिए रक्तदान महादान है, हम सभी को इसे करना चाहिए।

★★★

आप कर सकते हैं रक्तदान

रक्तदान को महादान तो कहा गया है, लेकिन क्या सभी व्यक्ति आसानी से रक्तदान कर सकते हैं, तो ऐसा नहीं है। रक्तदान करने के लिए अलग-अलग पैमाने बने हैं, जिसके बाद ही कोई रक्तदान कर सकता है।

डॉ. कृष्णा नंद पांडेय

विश्व भर में सड़क दुर्घटना के कारण होने वाली मौतें भारत में सबसे अधिक होती हैं। इसके अलावा रेल दुर्घटना, फैक्ट्री हादसे, आग में जलने, पानी में डूबने, आदि जैसी स्थितियां भी बड़ी संख्या में मौत का कारण बनती हैं। गम्भीर रूप से दुर्घटनाग्रस्त होने तथा प्रसव के दौरान अत्यधिक रक्तस्राव प्रायः जानलेवा सिद्ध होता है। थैलेसीमिया और हीमोफीलिया ग्रस्त रोगियों को प्रत्येक 15 से 20 दिन में खून चढ़ाने की आवश्यकता पड़ती है। इसी प्रकार तरह-तरह के अंगों के कैंसर, ब्लड कैंसर, ल्यूकेमिया के मरीजों को बार-बार खून और प्लेटलेट्स चढ़ाने की आवश्यकता होती है। गम्भीर एनीमिया की स्थिति में सामान्य रूप से आवश्यक मात्रा में खून नहीं बन पाता। इन अनेक स्थितियों में चोटग्रस्त व्यक्तियों और मरीजों को जीवित रखने के लिए खून चढ़ाना अर्थात रक्तदान ही एकमात्र विकल्प होता है। इसके लिए रक्तदान आवश्यक होता है।

कौन कर सकता है रक्तदान

18 से 65 साल की आयु और न्यूनतम 50 किलोग्राम से अधिक शरीर भार वाला स्वस्थ व्यक्ति रक्तदान कर सकता है। रक्तदाता का हीमोग्लोबिन स्तर 12.5 ग्राम प्रति डेसी लीटर से अधिक होना चाहिए। हीमोग्लोबिन के स्तर की यूनिट का तात्पर्य 100 मिलीलीटर रक्त में हीमोग्लोबिन की मात्रा ग्राम में होती है। एक स्वस्थ पुरुष द्वारा 3 महीने में एक बार तथा स्वस्थ महिला द्वारा 4 महीने में एक बार रक्तदान किया जा सकता है।

कौन नहीं कर सकता रक्तदान?

रक्तदाता का हेपेटाइटिस बी एवं सी, एचआईवी, सिफलिस, मलेरिया आदि जैसे संक्रमणों से मुक्त होना आवश्यक है। रक्तदाता में ब्लड कैंसर, ल्यूकेमिया अथवा किसी अन्य प्रकार के कैंसर का इतिहास नहीं होना चाहिए। हार्ट अटैक, बाईपास सर्जरी और एंजाइना से ग्रसित मरीजों का रक्त नहीं लिया जाता। दवाई के सेवन से मधुमेह को नियंत्रित रखने वाला व्यक्ति रक्तदान कर सकता है, परंतु इंसुलिन लेने वाले व्यक्तियों को सामान्यतः

रक्तदान की अनुमति नहीं दी जाती। इसी प्रकार क्रॉनिक किडनी और लीवर फेल्योर के साथ-साथ मिर्गी, शिजोफ्रेनिया जैसी मानसिक बीमारियों से पीड़ित व्यक्ति से भी रक्तदान इसलिए नहीं लिया जाता कि कहीं खून चढ़ाए जाने वाले व्यक्ति में किसी अन्य प्रकार की स्वास्थ्य समस्याएं एवं संक्रमण न उत्पन्न हो जाएं।

मादक द्रव्यों का व्यसन करने वाला व्यक्ति रक्तदान कभी भी नहीं कर सकता। रक्तदान से कम-से-कम 12 घंटे पूर्व मदिरा या अन्य नशीले पदार्थों का सेवन नहीं करना चाहिए। यदि किसी व्यक्ति ने पिछले 12 महीनों में असुरक्षित यौन सम्बंध तथा एक से ज्यादा पार्टनर अथवा यौन कर्मियों के साथ सम्बंध स्थापित नहीं किया गया हो। महिलाओं में मासिक धर्म के दौरान खून की भारी कमी होने के कारण उनके द्वारा उस अवधि में रक्तदान वर्जित है। इसी प्रकार महिलाएं प्रसव के 1 वर्ष तक रक्तदान नहीं कर सकतीं तथा शिशु को दुग्ध पान कराने की अवधि तक भी रक्तदान नहीं किया जाना चाहिए। बुखार, सर्दी-खांसी से पीड़ित व्यक्ति ठीक होने के 14 दिन बाद तक, एंटीबायोटिक दवाइयों का सेवन करने वाले व्यक्ति द्वारा 72 घंटे से 2 सप्ताह के बाद तक, रेबीज, हेपेटाइटिस बी का टीका लगवाने के 1 साल बाद तक, डेंगू, मलेरिया, टाइफाइड से पूरी तरह उपचारित होने के 3 से 6 महीने बाद तक, छोटी सर्जरी के 6 महीने तथा बड़ी सर्जरी के 12 महीने बाद तक रक्तदान के लिए प्रतीक्षा की जानी चाहिए। रक्तदान करने से पहले चिकित्सक द्वारा रक्तदाता में हीमोग्लोबिन, ब्लड प्रेशर (रक्त चाप) के स्तरों तथा विभिन्न पैरामीटरों की सघन जांच की जाती है।

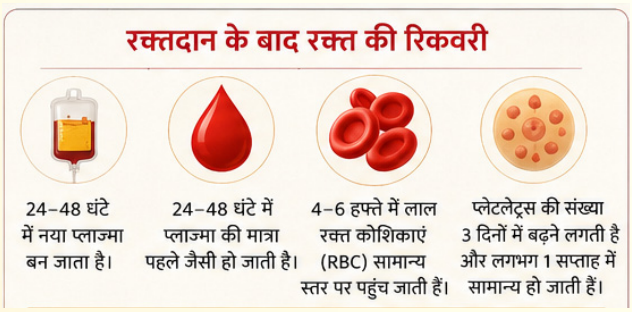

रक्तदान के बाद रक्त की रिकवरी

रक्तदान के बाद रक्त के विभिन्न घटकों की पुनःपूर्ति अलग-अलग समयावधि में होती है। एक निश्चित अंतराल पर रक्तदान प्रक्रिया में आयरन यानी लौह का स्तर संतुलित बना रहता है। इसके अलावा रक्तदान के 24 से 48 घंटे के भीतर शरीर में नया प्लाज्मा बन जाता है, रक्त का तरल हिस्सा यानी प्लाज्मा की मात्रा 24 से 48 घंटे के भीतर पहले जैसी हो जाती है तथा 4 से 6 हफ्ते में लाल रक्त कोशिकाओं यानी आरबीसी की संख्या भी सामान्य स्तर पर पहुंच जाती है, जिसके कारण शरीर में बोन मैरो यानी अस्थि मज्जा की क्रियाशीलता बनी रहती है। इस प्रकार रक्तदान के लिए रक्तदाता का स्वस्थ रहना आवश्यक है। इसलिए रक्तदान के बाद रक्तदाता द्वारा तरल पदार्थ का अधिक सेवन किया जाना चाहिए। प्लेटलेट्स की संख्या तीन दिनों के भीतर बढ़ने लगती है और लगभग एक सप्ताह में सामान्य हो जाती है।

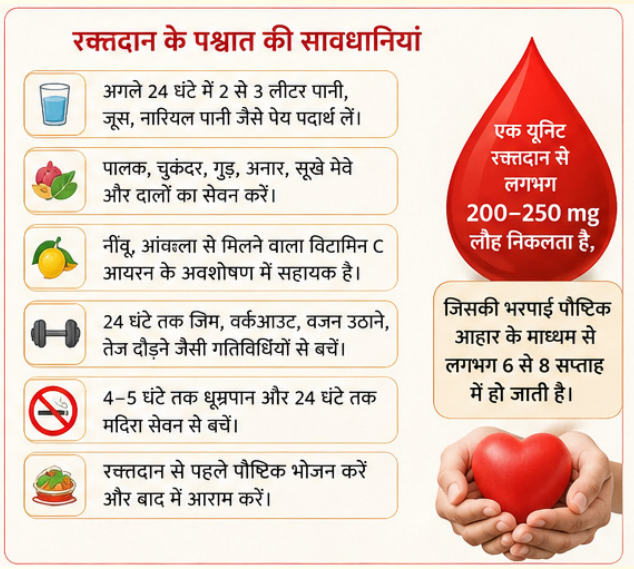

रक्तदान के पश्चात की सावधानियां

रक्तदान करने वाले व्यक्ति को अगले 24 घंटे की अवधि में 2 से 3 लीटर पानी, जूस, नारियल पानी जैसे पेय पदार्थों का सेवन करना चाहिए। पालक, चुकंदर, गुड़, अनार, सूखे मेवे तथा दालों के सेवन से आयरन के स्तर की शीघ्र पूर्ति होती है। नींबू, आंवला से प्राप्त होने वाला विटामिन सी आयरन के अवशोषण यानी एब्जॉर्प्शन में सहायक होता है। रक्तदान करने वाले व्यक्ति को 24 घंटे तक जिम में वर्कआउट करने, वजन उठाने, तेज दौड़ने जैसी गतिविधियों से बचना चाहिए। इसी तरह रक्तदान करने के बाद 4 से 5 घंटे तक धूम्रपान और 24 घंटे तक मदिरा सेवन से भी बचना आवश्यक होता है।

रक्तदान करने से पूर्व संतुलित मात्रा में पौष्टिक भोजन का सेवन तथा रक्तदान करने के बाद आराम करने से किसी भी प्रकार की परेशानी नहीं होती। एक यूनिट रक्तदान के दौरान शरीर से लगभग 200 से 250 मिलीग्राम लौह निकल जाता है, जिसकी भरपाई पौष्टिक आहार के माध्यम से लगभग 6 से 8 सप्ताह में हो जाती है। ★★★

धांधली

14 जून को हम न केवल रक्तदान करने का संकल्प लें बल्कि इसे भ्रष्टाचार मुक्त बनाने के लिए आवाज उठाने का भी प्रण लें। तभी सही अर्थों में 'महादान' का उद्देश्य सफल होगा।

डॉ. वेदप्रकाश दुबे

रक्तदान

महादान या महाव्यापार

रक्तदान महादान है– यह नारा हमने अधिकतर दीवारों पर लिखा और भाषणों में सुना है। एक ओर जहां 14 जून को 'विश्व रक्तदान दिवस' के अवसर पर निस्वार्थ भावना से लोग देश भर के शिविरों में कतारों में खड़े होकर अपनी रगों का खून दूसरों का जीवन बचाने के लिए दान करते हैं, वहीं दूसरी ओर इस मानवीय संवेदना के पीछे एक ऐसा काला बाजार और भ्रष्टाचार भी फल–फूल रहा है जो इस पूरे 'महादान' को 'महाव्यापार' में बदल देता है।

रक्तदान शिविर अधिकतर सामाजिक संस्थाओं, राजनीतिक दलों या कॉर्पोरेट घरानों द्वारा आयोजित किए जाते हैं। पहली दृष्टि में यह निस्वार्थ सेवा लगती है, लेकिन इसके पीछे कई तरह का भ्रष्टाचार सक्रिय रहता है। शिविरों में दानदाताओं को यह कहकर आकर्षित किया जाता है कि उनका रक्त गरीबों और आवश्यकमंदों को मुफ्त में दिया जाएगा, लेकिन सच्चाई यह है कि कई निजी ब्लड बैंक और बिचौलिए इन शिविरों से मुफ्त में या बेहद कम प्रशासनिक शुल्क पर रक्त यूनिट्स उठा लेते हैं और बाद में जिन मरीजों को आवश्यकता होती है उन्हें 10 से 15 गुना अधिक कीमतों पर बेचते हैं। अस्पतालों के बाहर सक्रिय दलालों का नेटवर्क सीधे सादे और मजबूर मरीजों के परिजनों को निशाना बनाता है। सरकारी अस्पतालों में जहां रक्त मुफ्त या न्यूनतम प्रोसेसिंग फीस पर मिलना चाहिए, वहां ये दलाल कृत्रिम कमी दिखाकर डोनर कार्ड्स या ब्लड यूनिट्स को मोटी रकम में बेचते हैं। इसके अलावा कानूनन व्यावसायिक रक्तदान (पैसे लेकर खून देना) प्रतिबंधित होने के बाद भी ड्रग एडिक्ट्स, बेघर और बेहद गरीब लोगों को चंद रुपयों का लालच देकर उनसे बार–बार रक्तदान कराया जाता है। ऐसे डोनर्स का रक्त अधिकांश कुपोषित या संक्रमित होता है, जो मरीज की जान जोखिम में डाल देता है।

रक्त एक बेहद संवेदनशील जैविक पदार्थ है, जिसे कड़े मानकों के अंतर्गत सम्भालना होता है, परंतु संकलन से लेकर भंडारण तक की यात्रा में भारी धांधली और लापरवाही देखने को मिलती है। नियमों के अनुसार निकाले गए रक्त को तुरंत एक निश्चित तापमान पर रेफ्रिजरेट किया जाना चाहिए, लेकिन ग्रामीण या अर्ध–शहरी क्षेत्रों में लगने वाले शिविरों में अधिकतर आइस बॉक्स और बिजली की उचित व्यवस्था न होने से कोल्ड चेन टूट जाती है। परिवहन के दौरान तापमान में उतार–चढ़ाव के कारण रक्त खराब हो जाता है, जिसे बिना जांचे वैसे ही स्टोर कर लिया जाता है। नियमानुसार हर ब्लड यूनिट की एचआईवी, हेपेटाइटिस बी और सी, मलेरिया और सिफलिस जैसी घातक बीमारियों के लिए कड़ी जांच होनी चाहिए, लेकिन कई अनधिकृत या कम बजट वाले ब्लड बैंक लागत बचाने के लिए घटिया क्वालिटी की टेस्टिंग किट्स का प्रयोग करते हैं

या बिना पूरी जांच किए ही रक्त को 'सुरक्षित' का टैग दे देते हैं। हद तो तब हो जाती है जब रक्त की निश्चित शेल्फ-लाइफ समाप्त होने के बाद भी कई भ्रष्ट ब्लड बैंक एक्सपायर हो चुके खून के बैग्स पर नई तारीखों के स्टिकर लगा देते हैं, ताकि उनकी आर्थिक हानि न हो। ऐसा रक्त मरीज के शरीर में जाकर सीधे जहर का काम करता है। इस संगठित भ्रष्टाचार और लापरवाही के परिणाम पूरे समाज और हमारी स्वास्थ्य व्यवस्था के लिए बेहद घातक सिद्ध हो रहे हैं। सबसे पहला और गम्भीर प्रभाव जन स्वास्थ्य पर पड़ता है; घटिया जांच या दूषित रक्त चढ़ने के कारण मरीजों में हेपेटाइटिस बी, हेपेटाइटिस सी और एचआईवी जैसी जानलेवा बीमारियों का संक्रमण अनजाने में फैल जाता है, जिससे मरीज एक नई मुसीबत में फंस जाता है। इसके साथ ही इस धांधली के कारण समाज में एक बड़ा 'विश्वास का संकट' खड़ा हो जाता है। जब आम जनता और स्वैच्छिक दाताओं को यह पता चलता है कि उनके द्वारा निस्वार्थ भाव से दान किया गया खून चंद पैसों के लिए बाजार में बेचा जा रहा है तो उनका पूरी व्यवस्था से विश्वास उठ जाता है। इसका सीधा असर भविष्य के रक्तदान शिविरों पर पड़ता है और लोग आगे आने से कतराने लगते हैं। अंततः यह स्थिति चिकित्सा नैतिकता के पतन को दर्शाती है, जहां जीवन रक्षक प्रणाली सेवा का माध्यम न रहकर विशुद्ध रूप से मुनाफाखोरी का एक क्रूर जरिया बनकर रह जाती है।

इस पूरे भ्रष्टाचार के चक्रव्यूह में सबसे असहाय और शोषित वर्ग ही पिसता है। अमीर लोग तो महंगे कॉर्पोरेट अस्पतालों और निजी ब्लड बैंकों से ऊंचे दामों पर खून खरीद लेते हैं, लेकिन असली मार उस गरीब दिहाड़ी मजदूर या मध्यमवर्गीय परिवार पर पड़ती है, जिसके पास न तो दलालों को देने के लिए मोटी रकम होती है और न ही तुरंत डोनर की व्यवस्था करने के लिए कोई रसूख। इसी तरह थैलेसीमिया, हीमोफिलिया और कैंसर से पीड़ित बच्चों और मरीजों को हर महीने या सप्ताह नियमित रूप से रक्त चढ़ाने की आवश्यकता होती है। यह वर्ग पूरी तरह से ब्लड बैंकों की निष्ठा पर निर्भर रहता है और जब इन्हें दूषित या एक्सपायर्ड खून मिलता है तो उनकी बची-कुची जिंदगी भी दांव पर लग जाती है। प्रसव के दौरान अत्यधिक रक्तस्राव के कारण गर्भवती महिलाओं को भी तत्काल रक्त की आवश्यकता होती है और समय पर या सही ग्रुप का रक्त न मिलने के कारण हर साल हजारों माताएं दम तोड़ देती हैं। रक्तदान दिवस मनाना और शिविर आयोजित करना तब तक सार्थक नहीं होगा, जब तक हम इस व्यवस्था को पारदर्शी नहीं बनाते।

★★★

राष्ट्रीय भावनाओं को जाग्रत करनेवाली सामाजिक व पारिवारिक पत्रिका

हिंदी विवेक
We Work For Better World

Combo Offer

ग्रंथ प्रकाशन का उद्देश्य

- भारत की आत्मा ...सेवा। जो केवल सहायता या दान नहीं है।
- सेवा का सही अर्थ है कर्तव्य, संवेदना और सामाजिक उत्तरदायित्व का समन्वय।
- सेवा को भावनात्मक कार्य से आगे ले जाकर विचारशील, सामाजिक प्रक्रिया के रूप में प्रस्तुत करना।
- सेवा के पीछे की भारतीय दृष्टि, प्रेरणा और दर्शन को उजागर करना।
- इस विचार को बल देना कि सेवा व्यक्ति को संस्कारित कर समाज को संगठित एवं सशक्त करने का प्रभावी माध्यम है।
- आदर्श सेवा कार्यों को संकलित कर समाज के प्रबुद्ध पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत करना।

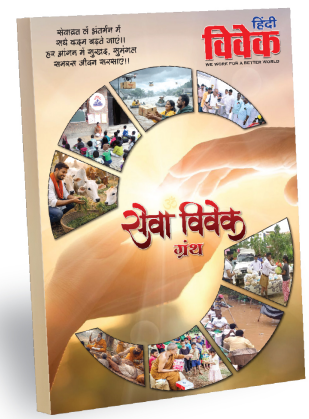

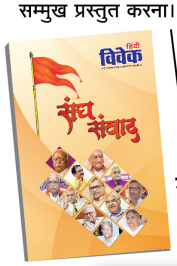

हिंदी विवेक की पंचवार्षिक सदस्यता + सेवा विवेक ग्रंथ

मूल्य ₹ 500 + मूल्य ₹ 1800 + मूल्य ₹ 700

कुल : ₹ 3000/-

आपको मिलेगा मात्र ₹ 2500 में

UPI पेमेंट गेटवे के लिए QR कोड स्कैन करें और मैसेज बॉक्स में अपना नाम, पता व सम्पर्क नंबर दर्ज करें।

ऑनलाइन पेमेंट करने के बाद कृपया 9594991884 पर कॉल करके सूचित करें या व्हाट्सअप करें।

Draft or Cheque should be drawn in the name of : HINDUSTHAN PRAKASHAN SANSTHA HINDI VIVEK

Bank : State Bank of India
Branch : Charkop
A/C No. : 43884034193
IFSC : SBIN0011694

स्थानीय प्रतिनिधि से सम्पर्क करें या...
कार्यालय : सहारा नांगरे - 9594991884
Email : hindivivekvargani@gmail.com

50+ YEARS OF MOMENTUM
दि कल्याण जनता सहकारी बँक लि.
मल्टी-स्टेट शेड्युल्ड बँक
बदलत्या हवामानात स्वतःची काळजी घ्या...
आणि कल्याण जनता बँकिंग ॲप द्वारे तुमची सर्व बँकिंग कामे करा
- सुरक्षितपणे, सहज आणि घरबसल्या.
अर्थ सहकारेण कल्याणम्
TOLL FREE: 1800 233 1919
kalyanjanata.bank.in
KJSBank

युवा चेतना

राष्ट्र निर्माण झींगुरों के शोर से नहीं, स्वयंसेवकों के मौन तप से होता है। कॉकरोच मानसिकता की अव्यवस्था से नहीं, संगठित समाज की स्वच्छ चेतना से होता है और किसी क्षणिक ट्रेंड से नहीं, पीढ़ियों तक चलने वाले संस्कारों से होता है।

प्रकाश और अंधकार का संघर्ष

अलकेश चतुर्वेदी

भारत का वर्तमान काल केवल आर्थिक विकास, तकनीकी प्रगति अथवा राजनीतिक परिवर्तन का काल नहीं है, यह राष्ट्र की युवा चेतना के पुनर्संस्कार का काल है। आज भारतीय युवा के समक्ष दो परस्पर विरोधी दृष्टियां उपस्थित हैं। एक दृष्टि व्यक्ति निर्माण, चरित्र निर्माण, कुटुम्ब प्रबोधन, सामाजिक समरसता, स्वावलम्बन, सेवा और राष्ट्रबोध के माध्यम से एक सशक्त भारत का निर्माण करना चाहती है। दूसरी दृष्टि समाज को निरंतर संघर्ष, असंतोष, पहचान-आधारित राजनीति, सांस्कृतिक विखंडन और तथाकथित प्रतिरोध की मानसिकता के माध्यम से देखती है।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के शताब्दी वर्ष का सबसे बड़ा संदेश यही है कि राष्ट्र निर्माण का मार्ग सत्ता परिवर्तन से नहीं, व्यक्ति परिवर्तन से होकर जाता है। संघ ने व्यक्ति निर्माण से राष्ट्र निर्माण की जिस साधना को एक शताब्दी तक निरंतर चलाया है, उसका परिणाम आज समाज जीवन के विविध क्षेत्रों में दिखाई देता है। शाखा में आने वाला स्वयंसेवक केवल व्यायाम नहीं करता, वह अनुशासन सीखता है। केवल खेल नहीं खेलता, वह संगठन सीखता है। केवल गीत नहीं गाता, वह राष्ट्रभाव को आत्मसात करता है। संघ की शाखा वस्तुतः व्यक्ति निर्माण की यज्ञवेदी है, जहां अहं से वयं की यात्रा प्रारम्भ होती है।

संघ का स्वयंसेवक सेवा को प्रदर्शन नहीं, साधना मानता है। यही कारण है कि सेवा बस्तियों से लेकर जनजातीय क्षेत्रों तक, ग्राम विकास से लेकर पर्यावरण संरक्षण तक, सामाजिक समरसता से लेकर कुटुम्ब प्रबोधन तक, स्वयंसेवक निरंतर कार्यरत दिखाई देता है। संघ के पंच परिवर्तन- सामाजिक समरसता, कुटुम्ब प्रबोधन, पर्यावरण संरक्षण, स्वदेशी तथा नागरिक कर्तव्य- वास्तव में आधुनिक भारत के सांस्कृतिक पुनर्जागरण के पांच स्तम्भ हैं। इनका उद्देश्य समाज को जोड़ना है, तोड़ना नहीं, आत्मबोध जगाना है, आत्महीनता नहीं, उत्तरदायित्व बढ़ाना है, केवल अधिकारों की मांग नहीं।

इसके विपरीत पिछले कुछ दशकों में भारत में सांस्कृतिक मार्क्सवाद की अनेक धाराएं सक्रिय हुई हैं। इनका मूल स्वभाव समाज को एकात्म इकाई के रूप में नहीं बल्कि परस्पर संघर्षरत समूहों के रूप में देखना है। इनके लिए परिवार संदेह का विषय है, परम्परा प्रतिगामिता का प्रतीक है, धर्म सामाजिक नियंत्रण का माध्यम है और राष्ट्रवाद एक संदिग्ध अवधारणा है। इसलिए वे निरंतर ऐसे विमर्श निर्मित करते हैं जिनसे समाज में स्थाई असंतोष और विभाजन की मानसिकता बनी रहे।

आज जेंडर इक्विटी, पहचान की राजनीति, प्रतिरोध संस्कृति और नैरेटिव परिवर्तन जैसे आकर्षक शब्दों की आड़ में अनेक बार ऐसे विचार प्रस्तुत किए जाते हैं जो भारतीय समाज की आधारभूत संस्थाओं को कमजोर करते हैं। यही कारण है कि आज अनेक तथाकथित क्रांतिकारी समूह सोशल मीडिया की आभासी दुनिया को ही समाज समझ बैठे हैं। उनके लिए ट्रेंड ही जनमत है, रील ही क्रांति है और वायरलता ही वैचारिक विजय है, किंतु भारत का इतिहास बताता है कि समाज परिवर्तन कैमरों के सामने नहीं, समाज के भीतर होता है। हैशटैग से नहीं, संस्कार से होता है और क्षणिक उत्तेजना से

नहीं, दीर्घकालिक संगठन से होता है। कुछ समय पूर्व देश ने ऐसे तथाकथित झींगुर बाबा जैसे प्रकरण देखे, जिन पर समाज को भ्रमित करने और धर्मांतरण जैसे गम्भीर आरोप लगे। यह संयोग नहीं कि झींगुर अंधेरे में सबसे अधिक सक्रिय होता है। वह रात भर शोर करता है, किंतु सूर्योदय होते ही उसकी उपस्थिति महत्वहीन हो जाती है। इसी प्रकार समाज में भ्रम, प्रलोभन और सांस्कृतिक विघटन के अनेक प्रयास भी तब तक प्रभावी प्रतीत होते हैं जब तक सत्य का प्रकाश उन पर नहीं पड़ता।

आज कुछ नवीन प्रकार की कॉकरोच राजनीति भी दिखाई देती है। कॉकरोच का स्वभाव प्रकाश में नहीं, अंधकार और अव्यवस्था में पनपना है। वह स्वच्छता का नहीं, गंदगी का मित्र होता है। यहां कॉकरोच किसी व्यक्ति का नहीं बल्कि उस मानसिकता का प्रतीक है जो निर्माण से अधिक विघटन में, उत्तरदायित्व से अधिक आरोप में, समरसता से अधिक संघर्ष में और राष्ट्रबोध से अधिक आत्मविरोध में विश्वास करती है। यह वही मानसिकता है जो समाज को जाति, वर्ग, क्षेत्र, लिंग, भाषा और पहचान के आधार पर खंडित करके देखती है। यह वही मानसिकता है जो हर परम्परा में दोष, हर आस्था में संदेह और हर राष्ट्रीय प्रतीक में प्रश्नचिह्न खोजती है।

झींगुर और कॉकरोच की सक्रियता का आधार अंधकार है, जबकि स्वयंसेवक की साधना का आधार प्रकाश है। एक ओर भ्रम का शोर है, दूसरी ओर सेवा का मौन पुरुषार्थ। एक ओर विखंडन का विमर्श है, दूसरी ओर एकात्मता का चिंतन। एक ओर सामाजिक अविश्वास का विस्तार है, दूसरी ओर समरसता का प्रयास। एक ओर सांस्कृतिक आत्महीनता है, दूसरी ओर भारतबोध का जागरण। स्वयंसेवक सेवा बस्ती में जाता है, ग्राम विकास का कार्य करता है, जल संरक्षण का अभियान चलाता है, पर्यावरण की रक्षा करता है, समरसता का संवाद स्थापित करता है, कुटुम्ब प्रबोधन के माध्यम से परिवार संस्था को सुदृढ़ करता है, नागरिक कर्तव्यों का बोध कराता है और समाज को जोड़ने का प्रयास करता है। यही राष्ट्र निर्माण का मार्ग है। इसके विपरीत जो विचारधाराएं केवल असंतोष, आक्रोश, विरोध और विखंडन को ही सामाजिक परिवर्तन का साधन मानती हैं, वे अंततः समाज को दिशा नहीं दे पातीं। भारत का भविष्य उन युवाओं के हाथ में है जो अपने राष्ट्र को केवल राजनीतिक इकाई नहीं बल्कि सांस्कृतिक चेतना मानते हैं, जो अधिकारों से पहले कर्तव्यों को समझते हैं, जो सेवा को साधना और संगठन को शक्ति नहीं, उत्तरदायित्व मानते हैं।

★★★

राष्ट्रीय भावनाओं को जाग्रत करनेवाली सामाजिक व पारिवारिक पत्रिका

हिंदी विवेक
We Work For A Better World
मासिक पत्रिका

शुल्क ₹ 500

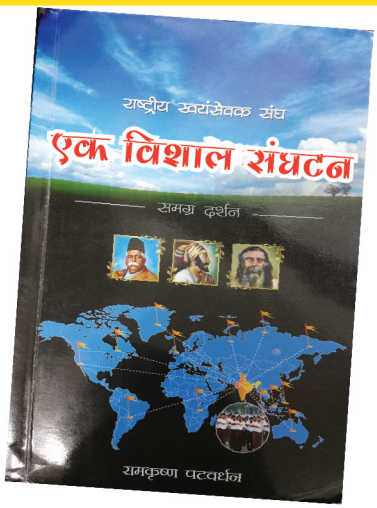

रा. स्व. संघ की स्थापना से लेकर शतकपूर्ति की यात्रा के विभिन्न पड़ावों तथा भविष्य के उद्देश्यों का सम्पूर्ण संकलन व आंकलन करने वाली पुस्तक

UPI पेमेंट गेटवे के लिए QR कोड स्कॅन करे और मैसेज बॉक्स मे अपना नाम, पता व सम्पर्क नंबर दर्ज करें।

ऑनलाईन पंजीयन करने के बाद कृपया 9594991884 पर कॉल करके सूचित करें या व्हाट्सअप करें।

Draft or Cheque should be drawn in the name of : HINDUSTHAN PRAKASHAN SANSTHA-HINDI VIVEK

Bank : Bank of Maharashtra Branch : Prabhadevi
A/C No. : 60085108000 IFSC : MAHB0000318

सम्पर्क - 9594991884 Email : hindivivekvargani@gmail.com

मानसून

भारत में मानसून में देरी या इसकी धीमी गति के लिए अल-नीनो प्रभाव, हिंद महासागर की कमजोर गतिविधियां, मैडेन-जूलियन ऑसीलेशन की स्थिति और मानसूनी हवाओं की अपर्याप्त गति शामिल हैं।

अभिषेक सुर्येश

अबहूं न बरसे बदरा

जून का महीना लगभग आधा बीत चुका है और जुलाई आने वाला है। उत्तर भारत से लेकर दक्षिण भारत तक लोग गर्मी का कहर झेल रहे हैं। गर्म हवाएं चलने के बीच देश भर के विभिन्न राज्यों के तापमान में लगातार बढ़ोतरी दर्ज की जा रही है, ऐसे में लोग अब मानसून से आस लगाए बैठे हैं और बारिश की प्रतीक्षा कर रहे हैं।

मौसम विभाग के अनुसार इस बार मॉनसून कुछ देरी से आएगा। भारत के दक्षिणी राज्य केरल में मॉनसून की शुरुआत हर वर्ष लगभग 4-5 जून के आस पास हो जाती है, लेकिन इस वर्ष स्थिति कुछ अलग है। अल-नीनो प्रभाव को समझें तो प्रशांत महासागर में समुद्र की सतह का तापमान बढ़ने से मानसूनी हवाएं कमजोर हो जाती हैं, जिससे भारत में नमी लाने वाली हवाओं का सामान्य प्रवाह बाधित होता है। वहीं हिंद महासागर की मौसम सम्बंधी गतिविधियां जो मानसून को गति देती हैं, यदि असामान्य रूप से कमजोर पड़ जाएं तो मानसून के आगे बढ़ने की गति धीमी हो जाती है। ऐसे ही मैडेन-जूलियन ऑसीलेशन यह एक समुद्री वायुमंडलीय घटना है, जो दुनिया भर में मौसम की गतिविधियों को प्रभावित करती है। इसमें बादलों और हवा का एक चक्र होता है, जब यह चक्र हिंद महासागर के बजाए प्रशांत महासागर की ओर होता है तो भारत में मानसूनी बारिश कम हो जाती है या इसमें देरी होती है। इसी के साथ कभी-कभी गर्मी के मौसम में उत्तर भारत में सक्रिय होने वाले पश्चिमी विक्षोभ तापमान को लम्बे समय तक कम रखते हैं, इसके कारण तिब्बत के पठार पर बनने वाला आवश्यक कम दबाव का क्षेत्र प्रभावित होता है, जो मानसूनी हवाओं को भारत की ओर खींचने के लिए आवश्यक है।

केरल में मानसून की घोषणा के लिए वर्षा के अलावा दक्षिण-पश्चिम हवाओं की एक निश्चित गति 15-20 नॉट्स और घने बादलों की उपस्थिति का पैमाना तय होता है, इन मानकों के पूरा न होने पर शुरुआत में मानसून की प्रगति सुस्त हो जाती है। जो भारतीय कृषि

प्रणाली के लिए एक संकट के रूप में उभरकर सामने आती है। चूंकि भारत एक कृषि प्रधान देश है इसलिए मानसून का समय से आ जाना कृषि और अर्थव्यवस्था के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। मानसून में देरी का भारतीय कृषि क्षेत्र पर सीधा और गहरा असर पड़ता है क्योंकि देश का लगभग 55-60% कृषि क्षेत्र और 61% से अधिक किसान सिंचाई के लिए पूरी तरह से वर्षा पर ही निर्भर हैं। खरीफ फसलों (जैसे धान, मक्का, दलहन और तिलहन) की बुवाई का समय पिछड़ जाता है, जिससे पौधों को पर्याप्त विकास का समय नहीं मिल पाता और कुल पैदावार में भारी गिरावट आती है। भारत के कृषि सम्पन्न देश होने के कारण भारतीय

अर्थव्यवस्था को प्राय: मानसून का जुआ कहा जाता है। देश की कृषि, पीने के पानी का स्रोत, वन्य जीव संरक्षण, पर्यावरण और पनबिजली उत्पादन बहुत सीमा तक इसी पर निर्भर करते हैं। अच्छा मानसून देश में आर्थिक समृद्धि और खाद्य सुरक्षा लाता है, जबकि कमजोर मानसून सूखे का कारण बन सकता है।

भारत के कुल फसल क्षेत्र का आधे से अधिक भाग वर्षा के अधीन है और सिंचित क्षेत्र का एक बड़ा हिस्सा बोरवेल के माध्यम से सिंचाई पर निर्भर करता है, जिसे भूजल के साथ रिचार्ज करने की आवश्यकता होती है। खराब मानसून की स्थिति में यह भूजल स्रोत पर्याप्त रूप से रिचार्ज नहीं होते हैं, जिससे जल संकट उत्पन्न होने की सम्भावना बनी रहती है। पिछले कई सर्वे में भारतीय शहरों जिनमें नई दिल्ली, हैदराबाद और चेन्नई सहित राजस्थान के कई बड़े क्षेत्रों में भूजल के शून्य होने की सम्भावना भी जताई जाती रही है।

जल संकट तथा कमजोर मानसून से कई फसलों के खराब होने पर सरकार को सक्रिय रूप से किसानों का समर्थन करने की आवश्यकता हो सकती है। सबसे अधिक सम्भावना इस बात की है कि यह सरकार को किसानों की आय का समर्थन करने हेतु वर्तमान सीजन की सभी फसलों के लिए न्यूनतम समर्थन मूल्य बढ़ाने हेतु प्रेरित कर सकता है। इससे कृषि निवेश में कमी आ सकती है। वहीं जल विद्युत भारत की कुल विद्युत आपूर्ति का 25 से 30 प्रतिशत हिस्सा प्रदान करती है। अच्छे मानसून से उपलब्ध वर्षा द्वारा प्राप्त जल का उपयोग एक मूल्यवान ऊर्जा संसाधन जलविद्युत के रूप में किया जा सकता है। जिसमें जलविद्युत के लिए वर्तमान में जलाशयों को दक्षिण-पश्चिम मानसून की बारिश के दौरान भर दिया जाता है और फिर बांधों के माध्यम से इस जल को धीरे-धीरे छोड़ा जाता है, जिससे साल भर विद्युत उत्पन्न होती रहती है। जब मानसूनी वर्षा कम होती है तो जलाशयों में पर्याप्त जल का भंडारण नहीं हो पाने से जल द्वारा उत्पादित पनबिजली की मात्रा सीमित हो जाती है। सामान्य मानसून की वर्षा खाद्य उत्पादों की उपलब्धता के कारण खाद्य मुद्रास्फीति पर नियंत्रण रखती है। हालांकि सूखे की स्थिति में खाद्य उत्पादों से सम्बंधित कीमतें काफी बढ़ जाती हैं। इसके अलावा यदि खराब मानसून के परिणामस्वरूप कम फसल उत्पादन होता है तो देश को खाद्यान्न आयात करने की आवश्यकता भी हो सकती है। इस प्रकार यह लगभग एक दर्जन से अधिक क्षेत्रों को भी प्रभावित कर सकता है, जो प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से मानसून पर निर्भर करते हैं।

दक्षिण-पश्चिम मानसून भारत की कृषि में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है जो विश्व की अधिकांश जनसंख्या की आजीविका को प्रभावित करता है। भारत में वार्षिक वर्षा की लगभग 80 प्रतिशत वर्षा गर्मी की अवधि के दौरान होती है और प्रमुख कृषि हेतु इस मौसम के दौरान फसलों को सिंचाई आदि माध्यमों से जल की आपूर्ति की जाती है। भारत में कृषि क्षेत्र आर्थिक और राजनीतिक दोनों रूप से महत्वपूर्ण है। यह क्षेत्र देश की 2.7 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था का लगभग 15 प्रतिशत और कुल रोजगार का लगभग 45 प्रतिशत है।

इसके अलावा भारत के विनिर्माण उत्पादन का लगभग एक-तिहाई जो कि देश के सकल घरेलू उत्पाद का लगभग 18 प्रतिशत है, खाद्य प्रसंस्करण से जुड़ा हुआ है। इस मानसून के दौरान गन्ना, जूट और धान जैसी जल की अधिक आवश्यकता वाली मानसून के अनुकूल फसलों की खेती आसानी से की जा सकती है। इसलिए बहुत अधिक वर्षा या बहुत कम या अस्थिर मानसून पैटर्न फसलों को हानि पहुंचा सकता है। ★★★

राष्ट्रीय भावनाओं को जाग्रत करनेवाली
सामाजिक व पारिवारिक पत्रिका

हिंदी विवेक
We Work For Better World

पंजीयन करें

सेवा विवेक ग्रंथ

मौलिक एवं संग्रहणीय ग्रंथ, स्वयं एवं परिजनों के लिए पंजीयन करें

ग्रंथ प्रकाशन का उद्देश्य

भारत की आत्मा ...सेवा। जो केवल सहायता या दान नहीं है।

सेवा का सही अर्थ है कर्तव्य, संवेदना और सामाजिक उत्तरदायित्व का समन्वय।

सेवा को भावनात्मक कार्य से आगे ले जाकर विचारशील, सामाजिक प्रक्रिया के रूप में प्रस्तुत करना।

सेवा के पीछे की भारतीय दृष्टि, प्रेरणा और दर्शन को उजागर करना।

इस विचार को बल देना कि सेवा व्यक्ति को संस्कारित कर समाज को संगठित एवं सशक्त करने का प्रभावी माध्यम है।

आदर्श सेवा कार्यों को संकलित कर समाज के प्रबुद्ध पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत करना।

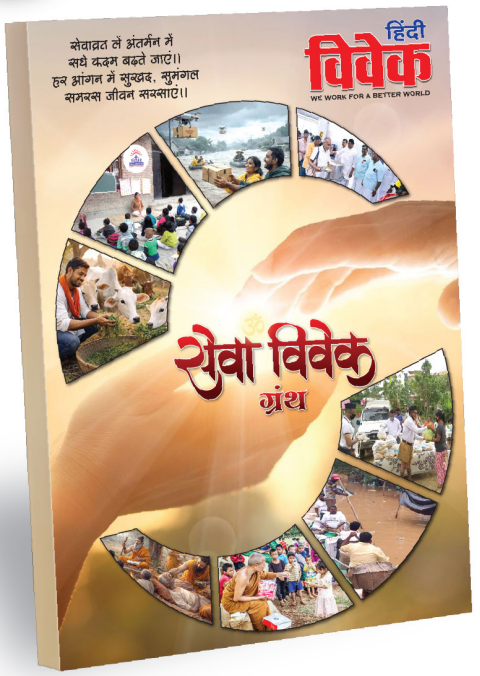

प्रकाशन पूर्व मूल्य
₹ 600/-

ग्रंथ का मूल्य
₹ 700/-

देश के गणमान्य विशेषज्ञों एवं लेखकों की कलम से समृद्ध विषय वस्तु से परिपूर्ण ग्रंथ

UPI पेमेंट गेटवे के लिए QR कोड स्कैन करे और मैसेज बॉक्स मे अपना नाम, पता व सम्पर्क नंबर दर्ज करें।

ऑनलाइन पेमेंट करने के बाद कृपया 9594991884 पर कॉल करके सूचित करें या व्हाट्सअप करें।

Draft or Cheque should be drawn in the name of : HINDUSTHAN PRAKASHAN SANSTHA HINDI VIVEK

Bank : State Bank of India
Branch : Charkop
A/C No. : 43884034193
IFSC : SBIN0011694

स्थानीय प्रतिनिधि से सम्पर्क करें
कार्यालय : सहारा नांगरे - 9594991884
Email : hindivivekvargani@gmail.com

समाचार वाचक से मीडिया एंकर तक

बदलाव

दूरदर्शन के शांत और संयमित समाचार वाचन से लेकर आज के हाई-वोल्टेज न्यूज़ स्टूडियो तक मीडिया ने लम्बी यात्रा तय की है। एक आदर्श न्यूज़ एंकर की भूमिका क्या होनी चाहिए और पत्रकारिता की विश्वसनीयता कैसे बनी रह सकती है, इस आलेख में जानते हैं।

जब बड़े हुए तो न्यूज केवल दूरदर्शन पर होती थी। उस समय समाचार पढ़ने का तरीका हैरान करता था। एकदम सधी हुई आवाज, साफ उच्चारण और चेहरे पर समाचार के अनुरुप भाव, लेकिन ये भाव शेयर मार्केट के दलालों जैसे नहीं होते थे और न ही गली में सामान बेचने वाले फेरी वालों की तरह। सादगी के साथ दी गई स्क्रिप्ट को कैमरे के सामने पढ़ना ही उनकी पहचान थी। उन दिनों न्यूज एंकर नहीं, समाचार वाचक हुआ करते थे। सलमा सुल्ताना, सरला माहेश्वरी, शम्मी नारंग जैसे समाचार वाचकों की अपनी अलग पहचान थी। लोग उनके नाम जानते थे, लेकिन वे खुद कभी समाचार से बड़े नहीं बने। उनकी आवाज घर-घर में पहचानी जाती थी, लेकिन उन्होंने कभी खुद को समाचार का केंद्र नहीं बनाया।

फिर टेलीप्रॉम्प्टर का दौर आया। तकनीक बदल गई, लेकिन प्रस्तुति का संस्कार नहीं बदला। दर्शकों को वही अनुभूति देने के लिए हर समाचार के साथ पन्ना पलटने की परम्परा भी काफी समय तक बनी रही। बचपन में हैरानी होती थी कि आखिर ये समाचार वाचक बिना देखे इतनी लम्बे-लम्बे समाचार कैसे पढ़ लेते हैं। बाद में समझ आया कि उसके पीछे अभ्यास, अनुशासन और पेशेवर प्रशिक्षण था।

मनीष शर्मा

इसके बाद शुरू हुआ न्यूज एंकर का दौर। समाचार वाचन और समाचार प्रस्तुति के बीच का अंतर धीरे-धीरे बढ़ने लगा। एंकर केवल समाचार पढ़ने वाला नहीं रहा बल्कि समाचार को समझाने, उसकी व्याख्या करने और कई बार उसका निर्णय सुनाने वाला चेहरा बन गया। समाचारों के साथ ज्यादा जुड़ाव आया, ज्यादा नाटकीयता आई और धीरे-धीरे न्यूज स्टूडियो बहस के अखाड़ों में बदलने लगे। मुझे लगता है कि सबसे बड़ा बदलाव नाटकीयता नहीं था। असली बदलाव यह था कि न्यूज एंकर के दौर में कई संस्थानों के सम्पादक निष्पक्ष नहीं रहे। परिणाम यह हुआ कि कई एंकर सुपारी किलर की तरह ठेका लेकर मैदान में उतरते दिखाई देने लगे कि आज किसे निपटाना है, किसे घेरना है और किसे बचाना है। डिबेट में टारगेट दिया जाने लगा कि उत्साह लाना ही है। यदि गेस्ट आपस में नहीं भिड़ेंगे तो मजा नहीं आएगा। यदि इमोशनल केस है तो आंखों में आंसू चाहिए। यदि राजनीति है तो करंट चाहिए, सनसनी चाहिए। यहीं से एंकर की भूमिका भी बदल गई और उसकी शैली भी, लेकिन बात केवल एंकर की प्रस्तुति की नहीं है। समाचारों के तेवर और कलेवर भी वही नहीं रहे। यह सब एंकर अकेले तय नहीं करता। इसके पीछे सम्पादकीय

सोच, संस्थान की नीति, बाजार का दबाव और टीआरपी की प्रतिस्पर्धा काम करती है। आज जब 24÷7 न्यूज चैनलों का दौर है, तब कई बार पुराने जमाने के समाचार याद आते हैं। उस समय न्यूज कम थीं, लेकिन शोर भी कम था। आज सूचना ज्यादा है लेकिन विश्वास कम दिखाई देता है। पहले दर्शक समाचार जानने बैठता था, आज उसे समझना पड़ता है कि समाचार कहां समाप्त हो रही है और राय कहां शुरू हो रही है। मीडिया एंकर की सबसे बड़ी जिम्मेदारी यही है कि वह तथ्य और राय के बीच की रेखा को स्पष्ट बनाए रखे। लोकतंत्र में मीडिया की भूमिका न्यायाधीश बनने की नहीं बल्कि सूचना देने की है। एंकर का काम दर्शक को तथ्यों से अवगत कराना है ताकि वह स्वयं अपना निष्कर्ष निकाल सके। तटस्थता का मतलब यह नहीं कि एंकर के अपने विचार नहीं होंगे। हर व्यक्ति की तरह उसके भी विचार हो सकते हैं, लेकिन कैमरे के सामने उसकी पहली जिम्मेदारी अपने विचारों को नियंत्रित करना है। उसकी आवाज, उसकी शारीरिक भाषा, उसके प्रश्न और उसकी प्रतिक्रिया- सबमें संतुलन दिखाई देना चाहिए। यदि वह एक पक्ष से कठोर प्रश्न पूछे और दूसरे पक्ष से नरम व्यवहार करे तो उसकी निष्पक्षता पर प्रश्न उठना स्वाभाविक है। दूरदर्शन के एंकरों की सबसे बड़ी विशेषता यही थी कि उनकी आवाज में शालीनता होती थी और भाव-भंगिमा में तटस्थता। वे आक्रामक नहीं होते थे, लेकिन कमजोर भी नहीं लगते थे। वे दर्शकों को प्रभावित करने का प्रयास नहीं करते थे बल्कि उन्हें जानकारी देने का प्रयास करते थे। यही कारण है कि दशकों बाद भी लोग उन्हें सम्मान और विश्वसनीयता के साथ याद करते हैं।

आज के मीडिया परिदृश्य में एंकरों के सामने चुनौतियां पहले से कहीं अधिक हैं। सोशल मीडिया की गति, ब्रेकिंग न्यूज की होड़ और दर्शकों का बंटा हुआ ध्यान उन्हें लगातार दबाव में रखता है। फिर भी पत्रकारिता का मूल सिद्धांत नहीं बदला है- सत्य, संतुलन और विश्वसनीयता। एक आदर्श मीडिया एंकर वही है जो समाचार को समाचार रहने दे। जो दर्शकों को उत्तेजित करने की बजाए जागरूक करे। जो बहस को लड़ाई में न बदलने दे। जो अपनी लोकप्रियता से ज्यादा अपनी विश्वसनीयता की चिंता करे। कदाचित् यही कारण है कि 24 घंटे के न्यूज चैनलों और हाई-वोल्टेज डिबेट्स के इस दौर में भी पुराने जमाने के समाचार वाचक याद आते हैं। उनकी आवाज में शोर नहीं था, लेकिन विश्वास था। उनकी प्रस्तुति में नाटकीयता नहीं थी, लेकिन गरिमा थी और कदाचित् पत्रकारिता की असली शक्ति भी यही है- विश्वास, गरिमा और तटस्थता।

★★★

भारत सौर उर्जा उत्पादन में अग्रणी

उपलब्धि

भारत सौर उर्जा में विश्व का दूसरा सबसे बड़ा देश बन गया है। प्रश्न यह उठता है कि क्या उत्पादन के अनुसार सौर उर्जा का वितरण होता है। आवश्यकता से अधिक उत्पादन और उसके अनुसार वितरण नहीं होने से उर्जा को संग्रहित कब और कैसे करते हैं, डालते हैं इस पर एक दृष्टि।

वैदेही द्विवेदी

क्या आपने कभी सोचा है कि जिस धूप से बचने के लिए हम गर्मियों में छाता ढूंढ़ते हैं, वही धूप आज भारत की ऊर्जा शक्ति का एक प्रमुख आधार बन चुकी है? जी हां, आपने सही सुना। अंतरराष्ट्रीय नवीकरणीय ऊर्जा एजेंसी की ताजा रिपोर्ट के अनुसार भारत ने वर्ष 2025 में अमेरिका को पीछे छोड़ते हुए दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा सौर ऊर्जा बाजार बनने का गौरव प्राप्त किया है।

सौर उर्जा का कितना उत्पादन होता है

आधिकारिक सरकारी आंकड़ों के अनुसार आज भारत की कुल सौर ऊर्जा क्षमता 157.05 गीगावाट तक पहुंच चुकी है। यह बिजली किन स्रोतों से प्राप्त हो रही है, आइए इसे सरलता से समझते हैं।

बड़े सोलर पार्क: मरुस्थलों और मैदानों में फैले बड़े प्लांट से सबसे ज्यादा 118.79 गीगावाट बिजली मिल रही है।

छतों पर लगे पैनल: हमारे और आपके घरों-कार्यालयों की छतों से ग्रिड को 27.88 गीगावाट बिजली मिल रही है।

हाइब्रिड प्रोजेक्ट्स: धूप और हवा के मिले-जुले प्रोजेक्ट्स से 4.06 गीगावाट का योगदान है।

ऑफ-ग्रिड सोलर: दूर-दराज के क्षेत्रों और खेतों में बिना तारों से सीधे 6.31 गीगावाट बिजली पैदा हो रही है।

जितनी बिजली का उत्पादन होता है, क्या उसी अनुपात में उसका वितरण भी हो पाता है? उत्तर है- अभी नहीं, लेकिन हम उस दिशा में तेजी से बढ़ रहे हैं। जरा सोचिए, आपने घर में बहुत सारा स्वादिष्ट खाना बना लिया, लेकिन यदि उसे अतिथियों की थाली तक सही समय पर परोसा ही न जाए तो उस खाने का क्या लाभ? सौर

ऊर्जा के साथ भी यही चुनौती है। इसके पीछे का कारण बहुत ही व्यावहारिक है। सूरज देव केवल दिन में चमकते हैं। यानी बिजली का उत्पादन दोपहर में सबसे ज्यादा होता है, लेकिन हम और आप बिजली का सबसे ज्यादा प्रयोग शाम-रात को करते हैं- जब ऑफिस से घर लौटते हैं, तब टीवी चलाते हैं, एसी या हीटर ऑन करते हैं। अब दोपहर की बनी बिजली को

शाम तक सुरक्षित कर रखना और उसे देश के कोने-कोने में पहुंचाना एक टेढ़ी खीर है। इस कारण कई बार बिजली का उत्पादन होने के बाद भी ग्रिड उसे पूरी तरह सम्भाल नहीं पाता। इसी कारण राजस्थान में मार्च से अगस्त 2025 के बीच लगभग 4 जीडब्ल्यू बिजली बर्बाद हो गई, जिससे लगभग 230-250 करोड़ की हानि हुई।

समस्या का समाधान क्या है?

वितरण के लिए क्या आवश्यक पैरामीटर है, जो सौर उर्जा का संचयन वितरण के लिए कर सके?

वैज्ञानिक और इंजीनियर दिन-रात ऐसी तकनीकों पर काम कर रहे हैं, जो इस धूप की बिजली को कैद करके रख सके। इसके लिए कुछ बहुत आवश्यक पैरामीटर्स और सिस्टम काम करते हैं।

बैटरी एनर्जी स्टोरेज सिस्टम: जैसे हमारे मोबाइल की बैटरी दिनभर चलती है, वैसे ही अब ग्रिड के स्तर पर बहुत बड़ी-बड़ी बैटरियां लगाई जा रही हैं। ये दोपहर की बिजली को संग्रहित कर लेती हैं और रात को जब आपको आवश्यकता होती है, तब सप्लाई करती है।

नेट मीटरिंग: यह आम उपभोक्ताओं के लिए सबसे बड़ा पैरामीटर है। यदि आपने अपने घर पर सोलर पैनल लगाया है तो दिन में बनी बिजली आप सरकारी ग्रिड को बेच सकते हैं। रात को जब आप ग्रिड से बिजली लेंगे तो वह आपकी बेची गई बिजली के बदले एडजस्ट हो जाएगी।

साथ ही इंटर स्टेट ट्रांसमीटर लाईन का जाल बिछाना भी आवश्यक है ताकि राजस्थान में बनी बिजली बिहार या ओडिशा तक पहुंच सके। यह काम चल रहा है, लेकिन अभी पूरा नहीं हुआ।

सौर ऊर्जा संग्रहित करने के लिए पैनल किस प्रकार काम करता है?

सोलर पैनल छोटे-छोटे 'सिलिकॉन' के टुकड़ों से बनते हैं, जिन्हें हम फोटोवोल्टिक सेल्स कहते हैं। जब सूरज की किरणें इस पैनल पर गिरती हैं तो सिलिकॉन के अंदर सोए हुए छोटे-छोटे इलेक्ट्रॉन जाग जाते हैं और ऊर्जा पाकर तेजी से भागने लगते हैं। विज्ञान का सीधा नियम है, इलेक्ट्रॉनों का प्रवाह ही विद्युत धारा कहलाता है। इस तरह बिना किसी धुएं के, बिना

किसी आवाज के, सीधे सूरज की रोशनी बिजली के तारों में करंट के रूप मे दौड़ने लगती है।

फिर इंवर्टर इस डीसी को ऐसी, जिस करंट से हमारे घर के पंखे, फ्रिज और लाइट चलते हैं, में बदलता है और फिर हम इसका प्रयोग कर पाते हैं।

हमने देखा कि किस प्रकार पिछले कुछ सालों में भारत के सौर ऊर्जा उत्पादन में एक जादुई बदलाव आया है। सरकार की 'पीएम सूर्य घर: मुफ्त बिजली योजना और पीएम कुसुम' जैसी योजनाओं ने इस तकनीक को सीधे आम आदमी की छत तक पहुंचा दिया है। आज गांव की चौपाल से लेकर बड़े शहरों की बहुमंजिला भवनों की छतों पर नीले-काले रंग के सोलर पैनल चमकते हुए दिख जाते हैं।

2030 तक भारत का लक्ष्य है 500 GW renewable energy का उत्पादन करना और हम उस रास्ते पर तेजी से बढ़ रहे हैं, लेकिन यह केवल सरकार के भरोसे नहीं चलेगा। असली बदलाव तब आएगा जब आप और हम भी इस यात्रा का हिस्सा बनेंगे। हमारी हर छत, हमारा हर बचाया हुआ यूनिट इस देश के उज्जवल भविष्य की नींव है। ★★★

आस्था से पर्यटन को नई उड़ान

राज्य

उत्तर प्रदेश आज अपनी प्राचीन सांस्कृतिक विरासत और आधुनिक विकास के समन्वय के साथ पर्यटन क्षेत्र में नई ऊंचाइयों की ओर अग्रसर है। बेहतर कनेक्टिविटी, आधुनिक सुविधाएं, सुदृढ़ कानून-व्यवस्था और धार्मिक स्थलों के विकास ने प्रदेश की नई पहचान स्थापित की है।

प्रेम कुमार चौबे

उत्तर प्रदेश केवल भारत का सर्वाधिक जनसंख्या वाला राज्य ही नहीं बल्कि भारतीय संस्कृति, दर्शन, अध्यात्म और इतिहास की जीवंत धरोहर भी है। भगवान श्रीराम की जन्मभूमि अयोध्या से लेकर भगवान श्रीकृष्ण की लीलास्थली मथुरा-वृंदावन तक, काशी विश्वनाथ धाम से लेकर मां विंध्यवासिनी के शक्तिपीठ तक, गंगा-यमुना-सरस्वती के पावन संगम से लेकर विश्वविख्यात ताजमहल तक, उत्तर प्रदेश विविधताओं से परिपूर्ण पर्यटन स्थलों का ऐसा प्रदेश है जो देश-विदेश के करोड़ों पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करता है। यहां की पावन नदियां, प्राचीन तीर्थस्थल, ऐतिहासिक धरोहरें, दार्शनिक परम्पराएं और लोक-सांस्कृतिक विरासत इसे भारत के सबसे महत्वपूर्ण पर्यटन केंद्रों में स्थान दिलाती हैं।

यद्यपि उत्तर प्रदेश की यह गौरवशाली विरासत सदियों पुरानी हैं, किंतु एक समय ऐसा भी था जब प्रदेश के अनेक महत्वपूर्ण पर्यटन स्थलों तक पहुंचना आसान नहीं था। खराब सड़कें, सीमित परिवहन सुविधाएं, आधारभूत संरचना का अभाव और सुरक्षा को लेकर बनी धारणाओं के कारण पर्यटकों को कठिनाइयों का सामना करना पड़ता था। परिणामस्वरूप पर्यटन की अपार सम्भावनाओं के बाद भी प्रदेश इस क्षेत्र में अपनी पूरी क्षमता का उपयोग नहीं कर पा रहा था, लेकिन बीते वर्षों में परिस्थितियों में उल्लेखनीय परिवर्तन देखने को मिला है। प्रदेश में एक्सप्रेस-वे नेटवर्क का विस्तार, आधुनिक रेलवे स्टेशनों का विकास, नए हवाई अड्डों की स्थापना और बेहतर सड़क सम्पर्क ने यात्रा को अधिक सुगम बनाया है। पूर्वांचल एक्सप्रेस-वे, बुंदेलखंड एक्सप्रेस-वे और गंगा एक्सप्रेस-वे जैसी परियोजनाओं ने प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों को आपस में जोड़ने का कार्य किया है। अयोध्या, वाराणसी, प्रयागराज और कुशीनगर जैसे शहरों में विकसित हो रही हवाई सेवाओं ने देश-विदेश के पर्यटकों के लिए यात्रा को सरल बनाया है। वाराणसी में इलेक्ट्रॉनिक रोपवे जैसी आधुनिक परिवहन परियोजनाएं आकर्षण का केंद्र बन रही हैं, जबकि लक्जरी बस सेवाएं, ई-रिक्शा और स्थानीय परिवहन के अन्य साधन यात्रियों को बेहतर सुविधा प्रदान कर रहे हैं।

उत्तर प्रदेश की पर्यटन पहचान का सबसे मजबूत आधार उसकी आध्यात्मिक विरासत है। अयोध्या में श्रीराम जन्मभूमि मंदिर के निर्माण के बाद यह नगर विश्वस्तरीय धार्मिक पर्यटन केंद्र के रूप में विकसित हो रहा है। चौड़ी सड़कें, आधुनिक रेलवे स्टेशन, अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा और व्यापक सौंदर्यीकरण श्रद्धालुओं के लिए नई सुविधाएं लेकर आए हैं। इसी प्रकार वाराणसी में काशी विश्वनाथ धाम कॉरिडोर ने मंदिर परिसर को नया स्वरूप प्रदान किया है और श्रद्धालुओं के लिए दर्शन व्यवस्था को अधिक सुविधाजनक

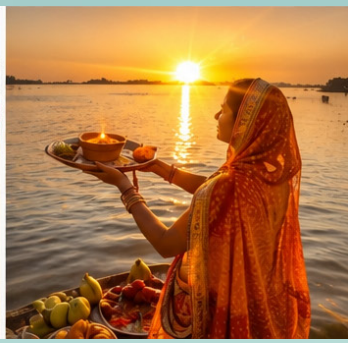

बनाया है।

प्रयागराज स्थित त्रिवेणी संगम भारत की आस्था का प्रमुख केंद्र है। गंगा, यमुना और अदृश्य सरस्वती के संगम पर स्नान करना करोड़ों श्रद्धालुओं के लिए आध्यात्मिक महत्व रखता है। महाकुम्भ और अर्धकुम्भ जैसे आयोजनों ने प्रयागराज को वैश्विक पहचान दिलाई है। संगम क्षेत्र का विकास और आधुनिक सुविधाओं का विस्तार यहां आने वाले श्रद्धालुओं के अनुभव को और अधिक सुखद बना रहा है।

मिर्जापुर स्थित मां विंध्यवासिनी धाम उत्तर प्रदेश के प्रमुख शक्तिपीठों में शामिल है। विंध्यवासिनी कॉरिडोर के विकास से श्रद्धालुओं को बेहतर सुविधाएं प्राप्त हुई हैं। वहीं प्रतापगढ़ का मनगढ़ धाम आध्यात्मिक पर्यटन के उभरते केंद्र के रूप में अपनी पहचान बना रहा है। मथुरा-वृंदावन उत्तर प्रदेश के पर्यटन मानचित्र का एक महत्वपूर्ण केंद्र है। श्रीकृष्ण जन्मभूमि, बांके बिहारी मंदिर, प्रेम मंदिर, इस्कॉन मंदिर और बरसाना जैसे धार्मिक स्थल देश-विदेश के श्रद्धालुओं को आकर्षित करते हैं। विशेष रूप से प्रेम मंदिर अपनी भव्य वास्तुकला और आकर्षक प्रकाश सज्जा के लिए प्रसिद्ध है।

उत्तर प्रदेश की सांस्कृतिक परम्पराएं भी पर्यटन को नई पहचान प्रदान करती हैं। बरसाना की विश्व प्रसिद्ध लट्ठमार होली और वृंदावन की फूलों की होली को देखने के लिए बड़ी संख्या में विदेशी पर्यटक पहुंचते हैं। वृंदावन की रासलीलाएं और जन्माष्टमी उत्सव भगवान श्रीकृष्ण की भक्ति परम्परा का अद्भुत दर्शन कराते हैं। श्रावण मास में विभिन्न शिवधामों की ओर बढ़ने वाली कांवड़ यात्रा आस्था और उत्साह का अनुपम दृश्य प्रस्तुत करती है। वहीं पूर्वांचल क्षेत्र में मनाया जाने वाला छठ महापर्व भी अपनी आध्यात्मिक गरिमा और सांस्कृतिक भव्यता के कारण आकर्षण का केंद्र बन चुका है। नदियों के घाटों पर अस्ताचलगामी और उदयमान सूर्य को अर्घ्य देने का दृश्य भारतीय संस्कृति की अनूठी छवि प्रस्तुत करता है।

धार्मिक पर्यटन के साथ-साथ उत्तर प्रदेश ऐतिहासिक पर्यटन का भी महत्वपूर्ण केंद्र है। आगरा स्थित ताजमहल विश्व के सात आश्चर्यों में शामिल है और प्रतिवर्ष लाखों पर्यटक इसे देखने आते हैं। आगरा किला और फतेहपुर सीकरी जैसी धरोहरें प्रदेश के गौरवशाली इतिहास की साक्षी हैं। वहीं लखनऊ की नवाबी संस्कृति, बड़ा इमामबाड़ा और रूमी दरवाजा भी पर्यटकों के आकर्षण का केंद्र बने हुए हैं। सारनाथ और कुशीनगर जैसे बौद्ध तीर्थस्थल अंतरराष्ट्रीय पर्यटन की दृष्टि से विशेष महत्व रखते हैं।

पर्यटन के अनुकूल वातावरण तैयार करने में कानून-व्यवस्था की सुदृढ़ स्थिति की भी महत्वपूर्ण भूमिका होती है। प्रदेश में अपराध नियंत्रण के लिए पुलिस की बढ़ी हुई सतर्कता, प्रमुख स्थलों पर सीसीटीवी कैमरों की स्थापना और तकनीकी निगरानी व्यवस्था ने सुरक्षा की भावना को मजबूत किया है। मुख्य मंत्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में कानून-व्यवस्था को लेकर अपनाई गई सख्त नीति ने आमजन और पर्यटकों के बीच विश्वास को बढ़ाया है। पहले जहां सुरक्षा को लेकर आशंकाएं व्यक्त की जाती थीं, वहीं अब अपेक्षाकृत बेहतर व्यवस्था के कारण पर्यटकों का रुझान उत्तर प्रदेश की ओर बढ़ा है।

प्रदेश सरकार द्वारा रामायण सर्किट, कृष्ण सर्किट, बौद्ध सर्किट, शक्तिपीठ विकास योजना, काशी विश्वनाथ धाम परियोजना, अयोध्या धाम विकास योजना और अन्य पर्यटन परियोजनाओं के माध्यम से पर्यटन को नई दिशा देने का प्रयास किया गया है। इन पहलों का उद्देश्य केवल धार्मिक स्थलों का विकास करना नहीं बल्कि स्थानीय अर्थव्यवस्था और रोजगार के अवसरों को भी बढ़ावा देना है।

★★★

आपकी आवाज को बुलंद करने वाली
सम्पूर्ण पारिवारिक व सामाजिक मासिक पत्रिका

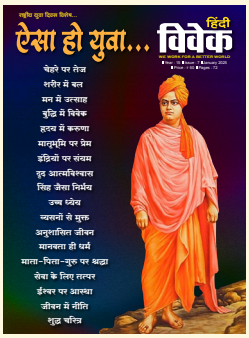

हिंदी विवेक

" We Work For A Better World"

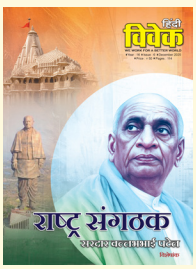

सदस्यता शुल्क

- वार्षिक मूल्य : रु. 500/-
- त्रैवार्षिक मूल्य : रु. 1,200/-
- पंचवार्षिक मूल्य : रु. 1,800/-
- संरक्षक मूल्य : रु. 25,000/-
- विदेशी सदस्यता शुल्क वार्षिक : रु. 5,000/-

खुद ग्राहक बनें व बनाएं

- जन्म दिन तथा अन्य समारोहों में हिंदी विवेक उपहार के रूप में भेंट करें।
- मित्रों, रिश्तेदारों तथा शुभचिंतकों को हिंदी विवेक की सदस्यता प्रदान करें।
- अपने दिवंगत स्नेहीजनों की स्मृति में 11, 21, 51 या 101 पाठकों को सदस्यता दें।
- विवाह के अवसर पर सदस्यता उपहार में दें।
- नववर्ष की शुभकामना के रूप में ग्रीटिंग कार्ड के स्थान पर हिंदी विवेक का सदस्यता रसीद प्रदान करें।

UPI पेमेंट गेटवे के लिए QR कोड स्कैन करें और मैसेज बॉक्स में अपना नाम, पता व सम्पर्क नम्बर दर्ज करें।

हिंदी विवेक कार्यालय

प्लॉट नम्बर 7, आरएससी रोड नम्बर 10, सेक्टर – 2, श्रीकृष्ण बिल्डिंग के पीछे, हनुमान मंदिर बस स्टॉप के समीप, चारकोप, कांदिवली (पश्चिम), मुंबई – 400067

सम्पर्क : +91 95949 91884

hindivivekvargani@gmail.com / hindivivekadvt@gmail.com

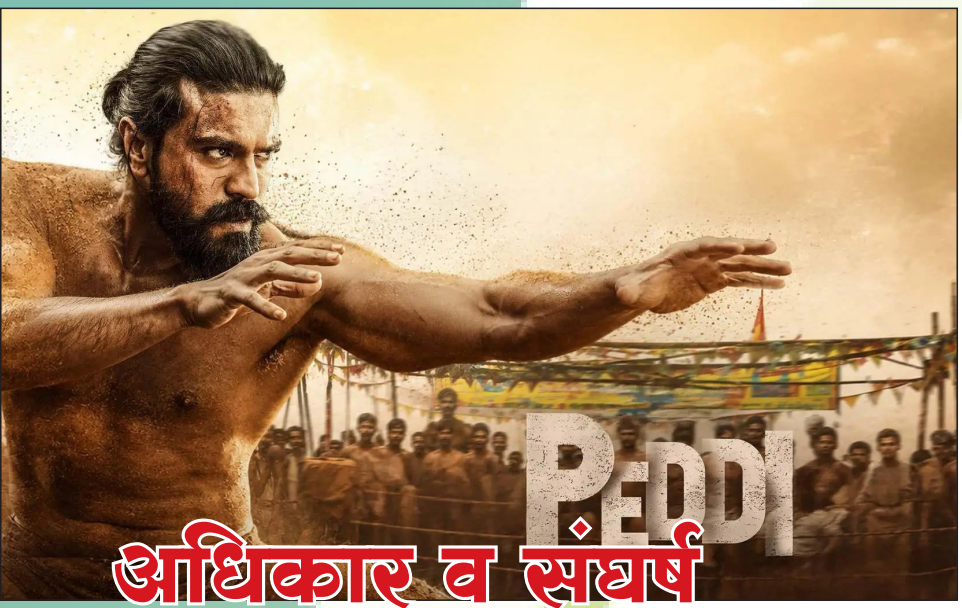

अधिकार व संघर्ष की कहानी पेड्डी

'पेड्डी' केवल खेल की कहानी नहीं है। यह फिल्म एक ऐसे गांव की कहानी कहती है, जिसका सरकारी अभिलेखों में कोई अस्तित्व नहीं है। रामचरण अभिनीत यह फिल्म खेल, भावनाओं और सामाजिक अधिकारों के संघर्ष को एक साथ पिरोती है।

अतुल गंगवार

खेल की पृष्ठभूमि पर पहले भी कई फिल्में बन चुकी हैं, कुछ बायोपिक तो कुछ काल्पनिक कहानी पर। दक्षिण के सुपर स्टार राम चरण, जान्हवी कपूर, जगपति बाबू के सर्वश्रेष्ठ अभिनय से सजी 'पेड्डी' भी ऐसी ही काल्पनिक कहानी पर बनी फिल्म है। फिल्म के निर्देशक हैं बुच्ची बाबू सना। फिल्म की कहानी विजयनगरम जिले की पहाड़ियों के नीचे बसे एक गांव की है, जिसका सरकारी कागजों में अस्तित्व ही नहीं है। उन्हें न तो वोट देने का अधिकार है और न ही आधारभूत सेवाएं मिलती हैं। यह कहानी अपनी पहचान, सम्मान और अधिकार पाने के लिए संघर्ष करने वाले लोगों की है। राम चरण और बच्ची बाबू सना ने इस कहानी को एक्शन और जज्बातों की चाशनी में लपेट कर सफलतापूर्वक दर्शकों को परोसा है। 3 घंटे 8 मिनट की यह फिल्म धीमी गति से शुरू होती है, लेकिन अंत तक आते-आते अपनी लय पकड़ लेती है। पेड्डी (राम चरण) इसी गांव का रहने वाला युवक है। गुड़ की फैक्ट्री में काम करने वाला पेड्डी स्थानीय क्रिकेट मैचों में पैसे लेकर खेलता है। गांव के बुजुर्ग अप्पलासूरी सालों से अपने गांव के लिए रेलवे स्टेशन की मांग कर रहे हैं, लेकिन उनकी आवाज कोई नहीं सुनता।

एक दुर्घटना के बाद पेड्डी इस लड़ाई को अपना मिशन बना लेता है। क्रिकेट से शुरू हुआ उसकी यात्रा कुश्ती और फिर एथलेटिक्स तक पहुंचती है। उसकी लड़ाई एक रेलवे स्टेशन की ना रहकर पूरे गांव को पहचान दिलाने की बन जाती है। क्या पेड्डी इसमें सफल होता है? क्या गांव के लोगों को पहचान मिलती है? इस लड़ाई को पेड्डी कैसे अंजाम देता है? यही फिल्म की मुख्य कहानी है।

राम चरण ने इस फिल्म में अच्छा अभिनय किया है। वो अपने अभिनय से दर्शकों को प्रभावित करने में सफल रहे हैं। विशेष रूप से दूसरे हिस्से में उनका अभिनय कई जगह आंखें नम कर देता है। शिव राजकुमार सीमित, लेकिन प्रभावी भूमिका में दिखाई देते हैं। जगपति बाबू ने अपने किरदार में भावनात्मक गहराई लाने का प्रयास किया है। जाह्नवी कपूर के हिस्से में ज्यादा कुछ करने को नहीं है। उनका किरदार ओर बेहतर गढ़ा जा सकता था।

बुच्ची बाबू सना की सबसे बड़ी शक्ति भावनाओं को पर्दे पर जीवंत करना है। फिल्म का मूल विचार बेहद दमदार है और दूसरे हिस्से में निर्देशक इस विचार को मजबूती से पकड़कर रखते हैं। कुश्ती वाले दृश्य और अंतिम आधा घंटा फिल्म का सबसे प्रभावशाली हिस्सा है। फिल्म का तकनीकी पक्ष मजबूत है। रत्नवेलु की सिनेमैटोग्राफी गांव, खेल के मैदान और भावनात्मक दृश्यों को खूबसूरती से कैद करती है। हालांकि कुछ दृश्य अपेक्षित प्रभाव नहीं छोड़ते।

एआर रहमान का संगीत फिल्म की जान है। गाने कहानी का हिस्सा बनकर आते हैं, मोहित चौहान के स्वर में 'चिकरी चिकरी' पहले ही लोकप्रिय हो चुका है। पार्श्व संगीत प्रभावी है।

राम चरण के प्रभावशाली अभिनय, दमदार क्लाइमैक्स और पहचान की लड़ाई पर आधारित 'पेड्डी' दर्शकों पर गहरा प्रभाव छोड़ती है। यदि आपको खेल, संघर्ष और इंसानी जज्बातों से जुड़ी कहानियां पसंद हैं तो 'पेड्डी' आपको निराश नहीं करेगी।

★★★

फीफा विश्व कप 2026 में पहली बार 48 टीमें भाग लेंगी। तीन देशों की संयुक्त मेजबानी में आयोजित होने वाला यह टूर्नामेंट विश्व फुटबॉल के एक नए अध्याय की शुरुआत करेगा।

फीफा विश्व कप 2026 का शुभारम्भ

राजीव रोहित

फीफा विश्व कप फुटबॉल 2026 का बिगुल बज गया। तीनों मेजबान देशों के 16 शहरों में अमेरिका के न्यूयार्क, अटलांटा, डलास, कंसास सिटी, सिएटल, फिलाडेल्फिया, मियामी, ह्युस्टन, लॉस एंजिलिस, सैन फ्रांसिस्को, बोस्टन कनाडा के वैंकुवर, टोरंटो और मैक्सिको के मॉन्टेरो, मैक्सिको सिटी और ग्वाडलाहारा) में सभी मैच खेले जाएंगे। दुनिया भर के खेल प्रेमी अपने देश की टीम को जीतते हुए देखना पसंद करेंगे, पर यह कार्य इतना आसान नहीं है। इसका कारण यह है कि 1930 में इस प्रतियोगिता को मान्यता मिलने के बाद पिछले 92 साल के 22 संस्करण में केवल 8 देश ही विश्व विजेता का खिताब जीत पाए हैं। ब्राजील पांच खिताब के साथ सबसे सफल टीम है, जबकि जर्मनी और इटली ने चार-चार बार ट्रॉफी जीती है। इस वर्ष 2026 में पहली बार 48 टीमों की सहभागिता वाला वाला विश्व कप का 23वां संस्करण अमेरिका, कनाडा और मैक्सिको की संयुक्त मेजबानी में खेला जाएगा। सम्भावित विजेताओं की बात की जाए तो ब्राजील को अब भी विश्व फुटबॉल का बेताज बादशाह मानते हुए सबसे ज्यादा आशाएं उसी से की जाती है। विश्व कप इतिहास में सबसे सफल टीम माने-जाने के बाद भी उसने 1958, 1962, 1970, 1994 और वर्ष 2002 के बाद से ब्राजील एक भी विश्व कप नहीं जीत पाई है। ब्राजील की सफलता में पेले, रोमारियो, रोनाल्डो, रोनाल्डिन्हो और नेमार जैसे सितारों का बड़ा योगदान रहा है। ब्राजील के बाद जर्मनी और इटली की शानदार विरासत का नाम आता है। जर्मनी ने 1954, 1974 और 1990 में पश्चिम जर्मनी के रूप में, जबकि एकीकृत जर्मनी ने 2014 में चौथी बार ट्रॉफी अपने नाम की। इस बार क्वालिफाई नहीं कर पानेवाली इटली ने 1934, 1938, 1982 और 2006 में विजेता का खिताब जीता था। हालांकि इटली इस बार विश्व कप के लिए क्वालिफाई नहीं कर सकी। उरुग्वे ने आधिकारिक तौर पर केवल दो विश्व कप (1930 और 1950) जीते हैं, लेकिन उसकी जर्सी पर चार स्टार दिखाई देते हैं। इसका कारण यह है कि 1924 और 1928 के ओलम्पिक फुटबॉल टूर्नामेंट को फीफा ने विश्व चैम्पियनशिप का दर्जा दिया था। इन्हीं दो उपलब्धियों के कारण उरुग्वे को अपनी जर्सी में अतिरिक्त दो स्टार लगाने की अनुमति मिली हुई है।

विश्व की सबसे चर्चित टीम अर्जेंटीना फिर इतिहास रचने के प्रयास में जी-जान से जुट जाएगी। उसने 1978, 1986 और 2022 में ट्रॉफी जीती। 1986 विश्व कप में कप्तान डिएगो माराडोना ने फुटबॉल इतिहास के दो सबसे चर्चित गोल किए थे। वहीं 2022 में लियोनेल मेसी की अगुवाई में अर्जेंटीना ने फ्रांस को हराकर तीसरा खिताब जीता। अब 2026 में अर्जेंटीना डिफेंडिंग चैम्पियन के रूप में उतरेगा। माना जा रहा है कि यह महान मेसी का आखिरी विश्व कप हो सकता है। इस कारण भी वे एक विश्व चैम्पियन टीम के सदस्य बनकर विदा लेना पसंद करेंगे।

फीफा विश्व कप 2026 इतिहास का सबसे बड़ा संस्करण होगा। पहली बार 48 टीमें हिस्सा लेंगी और कुल 104 मुकाबले खेले जाएंगे। पिछले 96 वर्षों का इतिहास यही कहता है कि विश्व कप जीतना बेहद कठिन है। डार्क हॉर्स टीमें भी अपने प्रदर्शन से पूरे विश्व को आश्चर्यचकित कर दें तो यह आश्चर्य की बात नहीं होगी। कुछ नए स्टार खिलाड़ियों का उदय भी तय है।

★★★

इजरायल में स्थापित होगी छत्रपति शिवाजी महाराज की प्रतिमा

भारत और इजरायल के सांस्कृतिक सम्बंधों को नई पहचान देने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल सामने आई है। इजरायल ने अपने एक प्रमुख शहर में छत्रपति शिवाजी महाराज की प्रतिमा स्थापित करने की योजना की घोषणा की है। यह घोषणा 6 जून 2026 को की गई, जिस दिन शिवराज्याभिषेक दिवस मनाया जाता है। प्रस्तावित प्रतिमा परियोजना भारत और इजरायल के बीच बढ़ते सांस्कृतिक एवं कूटनीतिक सम्बंधों का प्रतीक मानी जा रही है। यह पहल दोनों देशों के ऐतिहासिक और सामाजिक सम्बंधों को भी उजागर करती है। इजरायल में प्रस्तावित यह प्रतिमा एक दीर्घकालिक सांस्कृतिक परियोजना के रूप में विकसित की जाएगी। इसका उद्देश्य इजरायल के नागरिकों और पर्यटकों को छत्रपति शिवाजी महाराज के जीवन, उनके नेतृत्व और ऐतिहासिक योगदान के बारे में जानकारी प्रदान करना है। यह पहल दोनों देशों के लोगों के बीच सांस्कृतिक समझ और ऐतिहासिक जागरूकता को भी बढ़ावा देगी।

मैंग्रोव वन संरक्षण पर विशेष जोर

मैंग्रोव वन कई प्रकार से हमारे जलवायु, पर्यावरण आदि के लिए लाभकारी होते हैं। यहां तक कि ये तूफानों, चक्रवातों और सूनामी की लहरों की शक्ति को कम करते हैं, जिससे तटों का कटाव रुकता है और तटीय जनसंख्या की बाढ़ से रक्षा होती है। विदित हो कि ये खारे या नमकीन पानी में उगने वाले सदाबहार पेड़-पौधे हैं, जो भूमि और समुद्र के मिलन स्थल (तटों, डेल्टाओं) पर विकसित होते हैं। बताया जाता है कि मैंग्रोव सामान्य जंगलों की तुलना में लगभग पांच गुना अधिक कार्बन डाइऑक्साइड को अवशोषित कर 'ब्लू कार्बन' के रूप में जमा करते हैं, जिससे जलवायु परिवर्तन नियंत्रित होता है। ये वन कई जलीय जीवों, पक्षियों और मछलियों के लिए प्रजनन और शरण स्थल का कार्य करते हैं। पश्चिम बंगाल का सुंदरबन दुनिया का सबसे बड़ा मैंग्रोव वन है। भारत सरकार द्वारा पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय के माध्यम से तटीय राज्यों में मैंग्रोव के संरक्षण और रोपण के लिए विशेष योजनाएं चलाई जा रही हैं। महाराष्ट्र और मुम्बई के तटीय इलाकों और महाराष्ट्र के कोंकण तट पर मैंग्रोव संरक्षण के लिए वन विभाग और मैंग्रोव फाउंडेशन सक्रिय रूप से कार्य कर रहे हैं।

इधर भी देखें

1,800 साल पुराना मूंगे का टीला

शोधकर्ताओं ने पाया कि यह विशाल मूंगा पावोना क्लैवस प्रजाति का है, जिसे आमतौर पर आलू मूंगे के नाम से जाना जाता है। यह कॉलोनी लगभग 4,250 वर्ग मीटर में फैली हुई है, जो इसे विश्व स्तर पर पहले दर्ज की गई कई मूंगे की कॉलोनियों से भी बड़ा बनाती है।

कदमत द्वीप के पास स्थित यह प्रवाल संरचना स्थानीय गोताखोरों को वर्षों से ज्ञात है। हालांकि इसकी वैज्ञानिक पहचान हाल ही में की गई है।

दो नई होवरफ्लाई प्रजातियां मिलीं

पश्चिम बंगाल में गंगा के मैदानों क्षेत्रों में वैज्ञानिकों ने होवरफ्लाई की दो नई प्रजातियां एरिस्टालिनस सैफिरिनस और एरिस्टालिनस ब्रुनेट्टी की खोज की। वैज्ञानिकों ने इन कीटों की पहचान के लिए पारम्परिक आकारिकी (मॉर्फोलॉजी) अध्ययन के साथ-साथ आधुनिक तकनीक का भी उपयोग किया। इस तकनीक की सहायता से यह सुनिश्चित किया गया कि ये दोनों जीव पहले से ज्ञात किसी भी प्रजाति से अलग हैं।

मिला प्राकृतिक गैस का खजाना

केंद्रीय पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस मंत्री हरदीप सिंह पुरी ने घोषणा की है कि अंडमान सागर में एक नए स्थान पर प्राकृतिक गैस के भंडार का पता चला है। इस खोज को भारत की ऊर्जा आत्मनिर्भरता की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम माना जा रहा है। यह खोज ऑयल इंडिया लिमिटेड द्वारा अंडमान द्वीप समूह के पूर्वी तट से लगभग 15 किलोमीटर दूर स्थित श्री विजयपुरम-3 नामक खोजी कुएं में की गई है। यह कुआं लगभग 355 मीटर गहरे समुद्री क्षेत्र में खोदा गया था। शुरुआती परीक्षणों में यहां प्राकृतिक गैस की उपस्थिति की पुष्टि हुई है।

दुर्लभ ब्लू स्ट्रैगलर तारे और ब्राउन ड्वार्फ साथी की खोज

भारतीय वैज्ञानिकों ने एक अत्यंत दुर्लभ द्वितारा (बाइनरी) प्रणाली की पुष्टि की है, जिसमें एक ब्लू स्ट्रैगलर तारा और उसका हल्का ब्राउन ड्वार्फ साथी शामिल है। यह खोज तारों के निर्माण और विकास को समझने के लिए महत्वपूर्ण मानी जा रही है। शोध के अनुसार यह जोड़ा केवल 5.6 घंटे में एक-दूसरे की परिक्रमा पूरी करता है। ब्राउन ड्वार्फ का द्रव्यमान सूर्य के द्रव्यमान का मात्र 0.056 गुना है। यह प्रणाली तथाकथित 'ब्राउन ड्वार्फ डेजर्ट' क्षेत्र में स्थित है, जहां ऐसे पिंडों का पाया जाना अत्यंत दुर्लभ माना जाता है।

★★★

सुदर्शन सौर को टॉपकॉन पैनल से मिली मान्यता

छत्रपति संभाजी नगर। सौर उर्जा उत्पादनों के निर्माण में सुदर्शन सौर कम्पनी 35 वर्षों से एक विश्वसनीय कम्पनी के रूप में जानी जाती है। विदित हो कि उक्त कम्पनी ने कुछ साल पहले से ही सौर पैनलों का निर्माण कार्य शुरु किया है। केंद्रीय नवीकरणीय उर्जा मंत्रालय ने इसे मंजूरी दी है और सुदर्शन सौर का नाम अनुमोदित मॉडलों और निर्माताओं की सूची में शामिल कर लिया है। इससे देश में बन रही सभी सरकारी परियोजनाओं में सुदर्शन सौर पैनलों के उपयोग का मार्ग प्रशस्त हो गया है। कम्पनी के सौर पैनलों का निर्माण छत्रपति संभाजीनगर में स्थापित 360 मेगावाट क्षमता वाले संयंत्र में अत्याधुनिक टॉपकॉन तकनीक का उपयोग करके किया जाता है। यह तकनीक अधिक उन्नत है। सोलर पैनल उत्पादन के क्षेत्र में उक्त कम्पनी महाराष्ट्र में दूसरे स्थान पर है।

अतुल सावे अध्यक्ष निर्वाचित

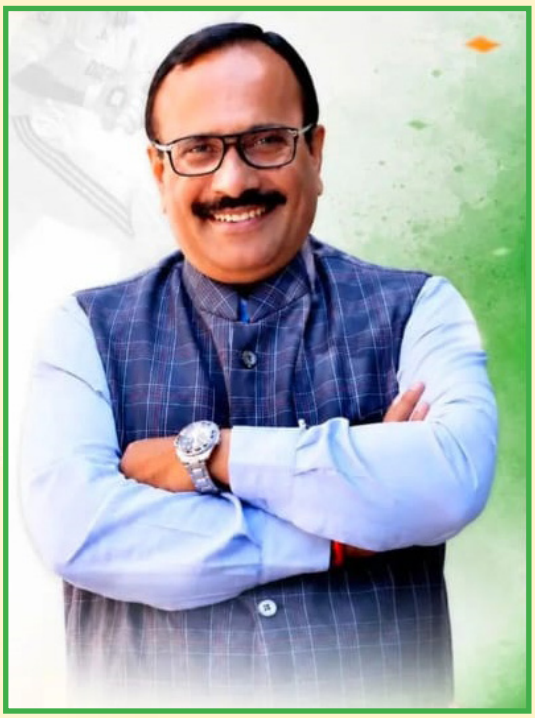

छत्रपति संभाजीनगर जिला क्रिकेट एसोसिएशन द्वारा कैबिनेट मंत्री अतुल सावे का निर्विरोध रूप से अध्यक्ष पद पर चयन किया गया है। इस अवसर पर उनके प्रशंसकों एवं क्रिकेट प्रेमियों में हर्ष व्याप्त है। हिंदी विवेक परिवार की ओर से उन्हें हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

योग दिवस पर होगा आयोजन

अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर कच्छ युवक संघ, नवी मुंबई द्वारा योग कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है। यह कार्यक्रम आगामी 21 जून को प्रातः 8:30 बजे से 9:30 बजे तक अणुव्रत स्थानक हॉल, जैन मंदिर के पीछे, सेक्टर–9, वाशी में आयोजित होगा।

कार्यक्रम में योग के माध्यम से स्वास्थ्य सुधार, तनाव कम करने तथा मानसिक शांति एवं संतुलन बनाए रखने के उपायों के बारे में जानकारी दी जाएगी। साथ ही योग के महत्व और इसके विभिन्न लाभों पर भी प्रकाश डाला जाएगा। इस योग कार्यक्रम में स्थानीय नागरिकों की अधिकाधिक उपस्थिति प्रार्थनीय है।

TJSB SAHAKARI BANK LTD.
MULTI-STATE SCHEDULED BANK
Bharose ka Bank Bhavishya ka Bank

TJSB's Professional Loan
Made for every ambition.

NO FEE
Zero prepayment charges

EXCLUSIVE
Exclusive for doctors, CAs, lawyers and more

Fast Approvals

*T&C Apply

www.tjsb.bank.in | ✆ : 022-48897203